द्वितीय अध्याय

"तमस उपन्यास का शिल्पगत अध्ययन "

2.1 "तमस" की कथावस्तु का समीक्षात्मक अध्ययन व निष्कर्ष।

2.2 "तमस" में चरित्र-चित्रण का समीक्षात्मक अध्ययन व निष्कर्ष।

2.3 "तमस" के कथोपकथन का समीक्षात्मक अध्ययन व निष्कर्ष।

2.4 "तमस" के देशकाल वातावरण का समीक्षात्मक अध्ययन व निष्कर्ष।

2.5 "तमस" की भाषा शैली का समीक्षात्मक अध्ययन व निष्कर्ष।

2.6 "तमस" के उद्देश्य का समीक्षात्मक अध्ययन व निष्कर्ष।

2.7 संदर्भ सूची

- - -

द्वितीय अध्याय

"तमस" उपन्यास का शिल्पगत अध्ययन

2.1 "तमस" की कथावस्तु का समीक्षात्मक अध्ययन :

उपन्यास का स्वरुप व्यापक है। वह जीवन के निकट होता है। युग की गतिशील पृष्ठभूमि के आधारपर इस में परिवर्तन होता है। जिनका लेखक अपने उपन्यास में चित्रण करता है। युग परिवेश का यथार्थ चित्रण लेखक की सफलता होती है। उपन्यास के विद्वानों ने छ: तत्व निर्धारित किए हैं। (1) कथावस्तु (2) चरित्र (3) संवाद (4) देशकाल-वातावरण (5) भाषाशैली और (6) उद्देश्य।

कथावस्तु :

कथानक उपन्यास का प्राण माना जाता है। बिना कथा के उपन्यास का निर्माण असंभव है। कथा प्रभावी, मार्मिक, कुतुहलपूर्ण होनी आवश्यक है जो पाठक को आद्य से अंत का प्रभावित करनेवाली चाहिए। डॉ. प्रताप नारायण टंडन ने "हिन्दी उपन्यास कला" में कथावस्तु का विस्तृत विवेचन कर कथानक की निम्न विशेषताएँ स्पष्ट की हैं -

1) पारस्पारिक संबध्दता -

2) वैचारिक मौलिकता -

3) घटनात्मक सत्यता -

4) शैली-गत निर्माण कौशल्य -

5) वर्णनात्मक रोचकता -

6) मानव जीवन और उनकी समस्याओं की व्याख्या -

7) युग, समाज तथा जीवन के प्रतिनिधित्व का संकेत -

8) जीवन की विविध अवस्थाओं का चित्रण

9) जीवन पक्षोंका मूल्यांकन

10) मानवीय अनुभूतियों की पूर्णात्मक अभिव्यक्ति"[1]

उपयुक्त विशेषताओं को देखने के बाद यह स्पष्ट होता है कि भीष्मजी ने "तमस" उपन्यास का निर्माण भी इन्हीं गुणों से युक्त ही किया है। विविध घटनाओं का गुंफन योजना बध्द पध्दति से किया है। सुअर मारने की घटना, सांप्रदायिक नफरत की आग, इर्षा, घृणा, मारकाट, खून, अत्याचार, बलात्कार आदि घटनाओं की भरमार हैं। साथ में मानवीयता, प्रेम, भक्ति, श्रध्दा से युक्त घटनाओं का संकेतात्मक चित्रण भी कुशलता से किया हैं। यह घटनाएँ विश्रृंखल, उखाड़ी-उखाड़ी हैं लेकिन कथानक को प्रभावी रुप में स्पष्ट करती हैं।

1973 में लिखा हुआ भीष्म साहनी का "तमस" उपन्यास सांप्रदायिक ढंगों तथा भारत पाकिस्तान विभाजन की पृष्ठभूमि पर आधारित है। 1975 में साहित्य अकादमीद्वारा इसे पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इसमें भीष्मजी ने जिस विभाजन के दुभाग्यपूर्ण करुण इतिहास को जिया है उसे "तमस" के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। धार्मिक आडम्बर, मिथ्या आदर्श, झूठे सिध्दान्त, गैर सांप्रदायिक, सामाजिक दृष्टिकोण का चित्रण इसमें यथार्थ के धरातल पर किया है। धर्माडम्बर से मनुष्य कमजोर एवं आत्मनिर्वासित होत जाता है।

भारतीय समाज रचना अनेक संप्रदायों में तथा वर्गों में बाँटी गयी है। बाहय शक्तियों के आक्रमण के कारण इसमें अनेक परिवर्तन हुए है। वर्ग बनते हैं - बिघडते हैं। उनमें अलगाव या बिखराव की स्थिति प्राचीन काल से लेकर आर्वाचीन काल तक जैसी की वैसी है। जिसके भयानक परिणाम समाज को खासकर गरीब, असहाय लोगों को भुगतने पड़ते हैं। परिणामतः मानवीय जीवन तथा समाजावस्था विकृत बनती है। इन विकृतियों के कारण मनुष्य सामर्थ्यहीन बनता है। भीष्मजी ने इसका सूक्ष्म चित्रण "तमस" में किया है।

"तमस" शब्द का अर्थ है - अंधकार, अज्ञान का अंधःकार "तम" शब्द से इसकी व्युत्पत्ति हुयी है। तम गुणोंसे युक्त व्यक्ति बुरे से भी बुरा कार्य करता है।[2] इसी कारण नामकरण की सार्थकता इस उपन्यास में है।

"तमस" उपन्यास स्वानुभूति परक उपन्यास है। लेखक का जन्म जिस वातावरण में हुआ उसका प्रभाव आसपास की घटनाओं का प्रभाव इस उपन्यास में परिलक्षित होता है। सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक समस्याओं को लेखक ने प्रभावी रुप में अंकित किया है। भारत विभाजन के समय जो भयानक दंगे हुए। जिसमें अंग्रेज नीतिने किस प्रकार अपनी भूमिका निभायी इसका संवेदनशील चित्रण किया है। शिल्पविधान की दृष्टि से बहुत ही संपन्न एवं कई गुणोंसे युक्त यह उपन्यास है। कथानक, चरित्रबोध,

संवाद, देश, काल, वातावरण तथा युगोबोध भाषा, उद्देश्य एवं दृष्टिबोध का सार्थक चित्रण इसमें मिलता है।

वस्तुविधान :

कथानक का प्रारंभ :- "तमस" उपन्यास का कथानक देश-विभाजन की पृष्ठभूमि एवं सांप्रदायिक दंगों पर आधारित है। इसमें केवल कल्पना नहीं है तो सच्ची घटनाओं के आधारपर इसका ताना-बाना बुना है जो हमारे हृदय को झंकृत करता है।/सांप्रदायिकता का स्तोम दिखलाकर जिन पशुवृत्तियों के दर्शन होते हैं, उसका यथार्थ एवं हृदयग्राही चित्रण भीष्मजी ने किया हैं। आज वर्तमान युग में भी इन्हीं संकीर्ण विचारों एवं वृत्तियों का सामना समाज को करना पड़ता है। यह सांप्रदायिक घटनाएँ हमे अभी आज भी जैसी की तैसी लगती है। क्योंकि यह विष आज भी हमारे समाज में फैला हुआ है। स्वयं भीष्म साहनी ने ऐसी भयानक परिस्थितियाँ अपनी आँखों से देखी हैं। (हिन्दु-मुसलमानों को भड़काने के पीछे अंग्रेज राजनीति भी सक्रिय है। क्योंकि अंग्रेजों ने "फूट डालो और राज करो" नीति अपनायी थी। इसी वजह से उन्होंने 200 वर्षोंतक भारत पर राज किया।

"तमस" केवल पांच दिन की कहानी है। इसका कथा क्षेत्र पंजाब है। कथा का प्रारंभ एक बंद कोठरी में नत्थू द्वारा सुअर मारने की घटनासे होता है। नत्थू दो घण्टों से उसे मारने की कोशिश करता है। पर सुअर मारना इतना आसान काम नहीं था। छुरे की नोक चर्बी की तहों को काटकर लौट आती थी, अंतडियों तक पहुंच ही नहीं पाती थी। लेकिन सुअर को मारना जरुरी था। क्योंकि अंग्रेज अफसर के इशारेपर मुरादअलीने नत्थू को पांच रुपये देकर सुअर मारने को कहा था। और उसे बताया था कि, डॉक्टरी काम के लिए एक मरा हुआ सुअर चाहिए। लेकिन सुअर को मारकर एक मस्जिद के सामने फेंक दिया जाता है। इसी घटनासे सांप्रदायिकता और दंगों का जो भयानक रुप उपन्यास में चित्रित किया है जो सुसंबध्दता के साथ लेखक के निर्माण कौशल्य का परिचय देता है। और आगे की घटनाएँ सत्य एवं मौलिकता के साथ रोचक बन गयी हैं।

दूसरे दिन सुबह काँगेस कमेटी के कार्यकर्ता प्रभात फेरी के लिए इकट्ठा हुए। उनके द्वारा प्रभात फेरी का आयोजन प्रति दिन किया जाता था। आज उन्होंने यह निश्चय किया था कि मुहल्ले की सफाई आवश्यक है जिसके लिए नालियाँ साफ करने का निर्णय लिया था। इस कमेटी के सदस्य हैं बख्शी, मेहता, रामदास, कश्मीरीलाल, शंकर, जनरैल आदि। जनरैल पक्का कांग्रेसी है। वह झण्डा उठाकर अग्रस्थान प्राप्त कर भाषण देता है। और वे नालियाँ साफ करने चले जाते हैं। जब वे मुसलमान मुहल्ले में आ जाते हैं, तब वहाँ उनकी प्रशंसा भी की जाती है। लेकिन देखते देखते वातावरण एकदम बदल जाता है। इधर-उधर से उड़ते हुए पत्थर आकर उनके पास गिरने लगते हैं।

मस्जिद की सीढ़ीपर सुअर फेंक दिया था। जिसके परिणाम स्वरुप मुसलमानोंद्वारा गाय को काटकर उसके अंग माई सत्तो की धर्मशाला के बाहर फेंक दिए गए। लोगोंने उसपर प्रतिक्रिया व्यक्त की "अब खून की नदियाँ बह जाएगी। शहरपर चीलें उडेंगी आसार बहुत बुरे है।"[3] सतसंग में की गई प्रार्थना भी निरर्थक साबित हुयी।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः

सर्वे भद्राणी पश्चन्तु सा कश्चित दुःख भाग भवेत्।"[4]

सभी ने शान्ति की कामना की। बुजुर्ग लोगोंने सलाह दी अंग्रेज अफसर के पास जाकर इन दंगों को रोकने की आवश्यकता है। तभी हिन्दु और मुस्लिम नेता रिचर्ड की कोठीपर पहुँचते हैं। और शांति स्थापना की मांग करते हैं। लेकिन रिचर्ड इस बात का इन्कार करता है। और उन्हें आपस में समझौता कर गांधी तथा नेहरु के पास जाने की सलाह देता है।

सभी प्रयत्नों के बावजूद जिस बात का डर था वही हुआ। सांप्रदायिकता के नामपर लोग एक दूसरे का गला घोटने पर तुली हुये। मुसलमान अपनी मस्जिद में शस्त्र एकट्ठा करने लगे, तो हिन्दु-सिख अपने अपने गुरुद्वारे में। युवकों को दिक्षा देने का काम प्रारंभ हुआ। हिन्दुओं की कमजोरी की भी शिकायत हुयी।

कथानक का विकास - (प्रथम खण्ड) :- इस हादसे का जो भयानक प्रारंभ हुआ जिसकी वजह से मारकाट आगजनी ने भयंकर रुप ले लिया। मंडी जलायी गयी। हिन्दू-मुस्लिम परस्पर एक दूसरे के मुहल्ले में जाने के लिए ड़रने लगे।

देवव्रतने हिन्दुओं के युवकों को शिक्षा देने की जिम्मेदारी ली। लाला लक्ष्मीनारायण का पंद्रह वर्ष का लडका रणवीर उनका पट्ट शिष्य बना। उसने गुरु के मुख से अनेक वीरों की कहानियाँ सुनी। अग्नीबाण और मेघबाण के गुण सुने। विमान, बम बनाने का तरिका वेदों में बताया गया है यह बात भी सुनी। हिमालय के योगी की कथा, योगशक्ति का चमत्कार उसे मालूम था। योगीराज ने योगशक्ति से म्लेच्छ को भस्म कर दिया था। ऐसी नयी-नयी बातें सुनी थी। रणवीर जिज्ञासू लड़का था। दृढ संकल्प की उसमें कमी नहीं थी। मास्टर ने उसे मुर्गी काटने को कहा जिससे वे उसकी मानसिक दृढता की परीक्षा लेना चाहते थे। युवकों के लिए मनसा, वाचा, कर्मणा की आवश्यकता है। यह सुन रणवीर साहसी बना। उसने अपने साथियों की मदद से शस्त्रागार बना लिया। तेल के डिब्बे, हलवाई की कड़ाही भी लायी गयी। लाठियाँ, तलवारें, छुरे का भी इंतजाम किया।

सारा माहौल आतंक ग्रस्त बना। इन सभी भयानक बातों को देख नत्थू घबरा गया। उसे लगा इन सब घटनाओं का जिम्मेदार वही है। सभी बाजार बंद हो गये। खबर मिली कि पुल के पार एक

हिन्दु को कत्ल कर दिया है। जिससे तनाव बढ़ता ही गया। "अल्ला हो अकबर" तथा "हर हर महादेव" जैसे नारों से सारा शहर गुंज उठा। आँखों में भय और संशय दिखाई देने लगा। घर, दूकान, कारोबार, स्कूल, दप्तर सब ठप्प हो गये।

रिचर्ड और लीजा की बातचित भी इन्ही सांप्रदायिक दंगों पर चल रही थी। रिचर्ड ने बता दिया कि "नस्ल सब की एक ही थी। वे लोग जो आर्य कहलाते थे और हजार वर्ष पहले यहाँ पर आये। सभी एक ही मूल जाति के लोग थे।"[5] ऐसे भाई-भाई लोग सांप्रदायिकता की संकीर्ण विचारधारा से ग्रस्त होकर आपस में लड़ रहे थे। लोगों की प्रतिक्रिया थी कि यह सब शरारत अंग्रेजों की है। जो भाई-भाई को आपस में लड़ता है और स्वयं मजा चखता है।

शाहनवाज धीर गंभीर दुनियादार आदमी था। रघुनाथ उसका हिंदु दोस्त था। शाहनवाज उसकी मदद करता है। उसे सुरक्षित स्थानपर पहुंचा देता है। लेकिन इस सौजन्यशिल वृत्ति के पीछे राक्षसीवृत्ति भी विद्यमान है जिसका परिचय नौकर मिलखी के साथ किया गया जो बर्ताव था उससे मिलता है। वह गरीब मिलखी की पीठ में जोरों से लाथ जमा देता है जो उसकी हिन्दुओं के प्रति संचित घृणा का द्योतक है।

युवा लोगों की रणनीति का शिकार एक गरीब इत्रफुलेल बनता है। वह इन बालकों को अबोध समझकर समझा-बुझाने की बात कर रहा था, इतने में उसकी अंतड़ियोंमें इंद्रने चाकू फँसा दिया था। जिसकी शिक्षा उनके गुरु द्वारा ही मिली थी। इन सभी घटनाओं का अपराध बोध नत्थू को हो रहा था।

इन घटनाओं का जो ताना-बाना हमारे सामने चित्रसा खड़ा कर कथा का क्रमबध्द विकास कर देता है। वह सभी घटनाएँ सांप्रदायिकता, फिसाद, अंग्रेज नीति की ओर संकेत कर देती हैं। इन बिखरी घटनाओं के द्वारा हमारे बिखरे - बिखरे जन जीवन-चित्र अंकित किये हैं।

छोटे छोटे ग्रामों में सांप्रदायिक दंगों की प्रतिध्वनि :

शहर के सांप्रदायिक दंगों की प्रतिध्वनि गांव तथा कस्बों तक पहुंच जाती है। द्वितीय खण्ड का कथाभाग प्रारंभ में ढोल इलाह बरव्श ग्राम में घटित होता है। शहर से आनेवाली बस दोपहर तक आयी ही नही थी। यहाँ हरनामसिंह की चाय की दुकान थी। सारा गांव मुसलमानों का था। हरनाम और उसकी पत्नी दोनों सिख थे। बंतो को खतरे का आभास होने लगा। लेकिन हरनामसिंह को विश्वास था कि कोई भी मुसलमान उसके साथ बुरा कार्य नही करेगा। क्योंकि उसे मुसलमानों पर भरोसा था। गाँव का करीमखान उनका हमदर्दी था, उसने दोपहर को आकर खबर दी कि बाहर के लोग आने की संभावना है, "गांव छोडकर चले जाओ।" करीमखान की बातोंसे हरनाम का विश्वास टूट गया। दोनों पति-पत्नी अपनी पुंजी और बंदूक लेकर निकल पड़े। बाहर का माहौल उन्हें अपरिचित था। उनके पीछे लोगों ने उनकी दुकान

लुट उसे आग लगा दी।

वे दोनों रातभर चलते रहें। सवेरा होते होते ढोक मुंरीदपुर में पहुंच गये। वहाँ वे एक मुसलमान परिवार में शरण लेते हैं। राजो उन्हें पनाह देती है और उनके प्राणों की रक्षा भी करती हैं। राजोकी मानवीयता और सहृदयता की झलक मिलती है। उन दोनों का पुत्र इकबालसिंह को जबर्दस्ती मुसलमान बना दिया जाता है। जो मुसलमानों की क्रूरता का परिचय देता है।

सैयदपूर के गुरुद्वारे का चित्र लेखक ने अंकित किया है। गुरुद्वारा लोगोंसे भरा हुआ है। सिख-संगत मोर्चा लेनी की तैयारी में है। स्त्री-पुरुष पूरी तरह आत्मबलिदान के लिए तैयार थे। उन्होंने शस्त्रास्त्र भी इकट्ठे किए थे। किसी स्त्रियों के कमर में कटार लटक रही थी। इसी गुरुद्वारे में हरनाम सिंह अपनी पत्नी के साथ पहुँच आया। उनकी बेटी जसबीर कौर भी वहाँ थी। गुरुद्वारा गंभीर लग रहा था। इसी गुरुद्वारे पर मुसलमान तुर्कोने हमला किया।

घमासान युध्द हुआ। दो दिन और दो रातों तक युध्द चलता रहा। गुरुद्वारे का असला समाप्त हो चुका था और लड़ना नामुमकिन हुआ और सिखों का संपर्क कट गया। तभी सिखोंने पैसे देकर समझौता करनेका निश्चय किया। लेकिन वे उसमें असफल हुए। सिखों ने तलवार से लड़ने का निश्चय किया और बाहर चले गये।

स्त्रियोंने गुरुद्वारे से बाहर ढलान के नीचे बने कुएँ में अपने बच्चों सहित प्राण दिए। चारों तरफ युध्द का भीषण वातावरण फैल गया। गलियाँ सुनसान पड़ी थी। आसमान में गिध्द मंडरा रहे थे। लाशों का ढेर लगा हुआ था। पांच दिनों में सांप्रदायिकता के नाम पर सैकडों मारे गए, हजारों बेघर हो गए। लाखोंकी संपत्ति नष्ट हो गयी।

।।7 गाँव और शहर की बरबादी हुयी। आकाश में हवाई जहाज मंडराने लगा। लोग बाहर आकर उसे देखने लगे। कस्बे का माहौल बदल गया। फिसाद रोकने का श्रेय अंग्रेजों को मिला। फिसादों के चौथे दिन अंग्रेज अफसर के द्वारा कफर्यू लगवाया गया। रिफयूजी कैम्प खोले गये। लाशें ठिकाने लगायी गयी। दोनों समुदायों के लोग अपने अपने धर्मस्थान को धो-धोकर साफ करने लगे। नुकसान की पूछ-ताछ होने लगी। "गरीब कितने मरे और खाते-पिते कितने मरे" इसका ब्यौरा पुछा गया। कोई घर-बार छोड जा रहा है। तो कोई उसे खरिद रहा है।

अमन कमेटी बनवायी गयी है। उसमें सभी सियासी जमातों के नुमाइन्दे (विवादों के बाद) शामिल हुए। शाहनवाज ने बस का इन्तजाम किया जिसपर लाउडस्पीकर, माइक्रोफोन लगाया गया। छतपर काँग्रेस और मुस्लिम लीग के झाण्डे लगाये थे। लोगोंने देखा कि एक आदमी हाथ में माइक्रोफोन लिए बैठा था वह मुरादअली था। जिसने प्रारंभ में नत्थू द्वारा सुअर मरवा दिया था, जिसका इतना भीषण परिणाम हुआ था।

नत्थू भी इन दंगों का शिकार बन गया था। अब मुरादअलीने नारे लगाना शरू कर दिया और अमन की बस शान्ति अभियान पर निकल पड़ी मुरादअली का व्यंग्यात्मक चित्रण बहुत ही प्रभावी बन गया है।

राजनीतिक तथा सामाजिक वातावरण का, स्थितियोंका, विचार धाराओं का, व्यक्ति-व्यक्ति की भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियों का गहन, गंभीर यथार्थ भीष्मजी ने उद्घाटित किया है। धर्म की आड़ में नफरत की ज्वाला कितनी भयंकर होती है। इसके पीछे सांप्रदायिक शक्तियाँ कैसी इन बातों को भड़का देती है। अफवाहें लोगों के मनमें डर पैदा करती है, घृणा और इर्षा का भाव बढ़ा देती है इन बातों को लेखक ने प्रभावी रुपमें चित्रित किया है। भय के कारण मुसलमान भारत छोड पाकिस्तान गये हिन्दू पाकिस्तान छोडकर भारत आ गये यह वास्तविक जीवन यथार्थ है। एक ही मूल जाति के, नस्ल के लोग आपसमें झगड़ते है। आगजनी, खून, अत्याचार से भरा यह इतिहास बहुत ही भयानक था।

निष्कर्ष :

"तमस" का कथानक राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन की व्यथा-कथा है। इसमें वास्तविक और यथार्थ घटनाओं का अंकन है। भारत विभाजन हमारे इतिहास का एक करूण अध्याय है। सांप्रदायिकता की आग में झुलसता समाज, तनाव एवं आतंक ग्रस्त लोगों की विवशता का इसमें चित्रण है। यह कोई काल्पनिक बात नहीं है तो सच्ची, आँखों-देखी घटनाएँ हैं। धर्म के नाम पर आदमी के भीतर छिपी पशुवृत्तियों का प्रभावी एवं मार्मिक चित्रण भीष्मजी ने किया है। इस प्रकार की घटनाएँ केवल इतिहास नहीं है, तो आज भी इन्ही संकीर्ण विचारों - आचारों का सामना समाज को करना पडता हैं। यह सांप्रदायिकता का विष आज भी हमारे समाज में फैला हुआ है।

कथानक में ऐसी भयावह घटनाएँ है जिससे अनेक बातों का पर्दाफाश लेखक ने किया है। सुअर मारने की घटना से जो रक्तपात होता है, उससे मानव मूल्यों की उपेक्षा होती ही है लेकिन बेकसूर लोगों पर जो गुजरती है वह बहुत ही ड़रावनी बात है। इसमें हर घटना सांप्रदायिकता की निरर्थकता को प्रकट करती है। अंग्रेज नीति की ओर संकेत कर राष्ट्रीय पार्टीयोंकी कमजोरियाँ भी इसमें प्रकट की है।

इसमें जो घटनाएँ हैं उससे लेखक पूरी तरह परिचित है। उन्होंने अपनी आँखों से इन्हें देखा है। मंडी की आग, दूसरे धर्मों के लोगों को भड़काने के लिए की हुइ शरारतें, मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं पर किए गये अत्याचार, काँग्रेस मुस्लिम लीग का संघर्ष, अंग्रेजों की कूट नीति, स्वार्थान्धता, स्त्रियों के साथ बूरे बर्ताव, अमीर-गरीब भेदभाव का जो चित्रण है, वह हमारे समाज पर छाया हुआ "तमस" ही है।

"तमस" की कथा कथानक के लिए अनकुल सभी गुणों से युक्त है। उसमें वर्णनात्मक, व्यंग्यात्मक, सांकेतिक, चलचित्रणात्मक शैली में जो वातावरण अंकित किया है वह बहुत ही अनुठा हुआ है। सांप्रदायिकतारुपी "तमस" की सघनता दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है। यह बात बहुत ही गंभीर है। इसमें सजीवता है। कडुआ यथार्थ है।

2.2 "तमस" के पात्रों का समीक्षात्मक अध्ययन :

प्रतापनारायण टंडन ने कहा है "वास्तव में उपन्यास का मूल विषय मनुष्य और उसका जीवन होता है। पात्रों के माध्यम से उपन्यासकार जीवन के विविध रूपों को उपस्थित करता है।"[6] उपन्यासकार के पात्र मनुष्य के बाहय तथा आन्तरिक प्रवृत्तियों का, क्रिया कलापों का, गुण-अवगुणों का, प्रतिक्रियाओं का, मान्यताओं का, विचारधाराओं का स्पष्टीकरण देते हैं। जिससे युग बोध का परिचय हमें मिलता है। पात्रों चरित्रांकन करने की शैली उपन्यासकार पर निर्भर होती है। वे पात्र उसके कल्पनापुत्र होते है। उनका मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्वाभाविक चित्रण उपन्यासकार करता है। जीवन की सरलता और जटिलता इससे अभिव्यक्त होती है। पात्रों की व्यावहारिकता, धार्मिकता, अध्यात्मिकता, सामाजिकता स्पष्ट होती है। जिनके आधारपर लेखक प्रत्येक वर्ग का प्रतिनिधित्व स्पष्ट करनेवाले पात्र, या भिन्न व्यक्तित्व के होनेवाले पात्र स्पष्ट करता है। जिनमें परिवर्तनशील, व्यक्ति पात्र भी होता है।

पात्रों का बाहय व्यक्तित्व स्पष्ट करते समय वेशभुषा, शरीर रचना, भाषा, रहन-सहन आदि का सूक्ष्म चित्रण लेखक करता है। और उनका आन्तरिक व्यक्तित्व स्पष्ट करने के लिए बौध्दिक उहा-पोह का स्पष्टीकरण कर देता है। जिसमें भावुकता भी होती है। चारित्रिक विशेषताओं की सफलता पाठकों के हृदय को प्रभावित करनेपर निर्भर होती है।

प्रेमचंदजी उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र समझते है। मानव चरित्र के भिन्न भिन्न पहलूओं का चित्रण कर उपन्यासकार जीवन दर्शन को स्पष्ट कर देता है। जिनमें पात्रों का उत्थान-पतन, उतार-चढाव, घात-प्रतिघात, द्वंद्व आदि जीवन संघर्ष को स्पष्ट कर देता है। यह चरित्रांकन दो पध्दतियों से किया जाता है। उपन्यासकार प्रत्यक्ष रूपमें स्वयं उन पात्रोंकी जानकारी देता है, तो कभी उन्हें बोलने का अवसर देकर पात्रों का अप्रत्यक्ष रूपमें चरित्र स्पष्ट कर देता है।

पात्रों का वर्गीकरण विभिन्न पध्दतियों से किया जाता है —

1) क्षेत्रिय आधारपर :

   1) शहरी पात्र 2) ग्रामीण पात्र

2) धर्म के आधार पर:

   1) हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, अंग्रेजी आदि

3) कथानक के आधार पर :

   1) प्रधान पात्र 2) गौण पात्र 3) नगण्य पात्र

4) लिंग के आधार पर :

   1) पुरूष पात्र 2) स्त्री पात्र

5) वृत्ति के आधारपर :

1) मानवीय गुणों से युक्त पात्र।

2) अधम पात्र।

6) विचारधारा के आधारपर :

1) काँग्रेसी, कम्युनिस्ट, मुस्लीम लीग, आर्य समाजी आदि पात्र।

7) श्रेणी के आधारपर :

1) उच्च श्रेणी के पात्र।

2) निम्न श्रेणी के पात्र।

3) सामान्य पात्र।

यह वर्गीकरण "तमस" उपन्यास के कथानुकुल बनवाया गया है। क्योंकि इनमें मानव जीवन की व्यापक अनुभूति होने के कारण भीष्मजीने पात्रों का चुनाव सही ढंग से किया है।

चरित्र चित्रण के कई गुण प्रताप नारायण टंडन स्पष्ट किये हैं -

1) कथात्मक अनुकूलता :- कथानक में जो युगबोध और वातावरण होता है, उनके आधारपर पात्रों का चुनाव होना आवश्यक है।

2) स्वाभाविकता :- चरित्र चित्रण का दूसरा आवश्यक गुण व्यावहारिक स्वाभाविकता है। जो पाठकों को प्रभावित कर उन्हें अपने विचार प्रवाह के साथ बहा ले जा सकती है।

3) चारित्रिक सप्राणता :- पात्रों की कथानक में कार्यस्थिति और उनके प्रतिक्रियात्मक व्यवहार से इस विशेषता का संबंध होता है।

4) यथार्थता :- जिन पात्रों का चुनाव किया जाता है वे पात्र स्वाभाविक रूप से समाज के विभिन्न वर्गोंका प्रतिनिधित्व करनेवाले होते हैं। और यथार्थ जीवन दर्शन को स्पष्ट करते है।

5) भावात्मक सहृदयता :- पात्रों की मानवीयता को स्पष्ट करनेवाला गुण सहृदयता है। जो परस्पर सुख दुःख में सहानुभूति बरतते हैं।

6) रचनात्मक मौलिकता :- उपन्यास के प्रत्येक पात्र में व्यवहार, विचार और आदर्श की रचना मौलिक दृष्टिकोण से की जाती है।

7) अन्तर्द्वद्वात्मकता :- पात्रों का चरित्रांकन द्वंद्वग्रस्त भी होता है। जिसमें मन की उद्विग्नता, उचित-अनुचित भावनाएँ चेष्टाएँ स्पष्ट की जाती है। जो पात्र मनुष्य की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियाँ स्पष्ट करते हैं।

8) रोचकता :- रोचक कथानक के साथ साथ पात्रों का रोचक होना भीं अनिवार्य है।

उपन्यासकार कुतुहलता पूर्ण कथानक रोचक पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। जो काल्पनिक और बौध्दिक संभावनाओं की पूर्ति करते है।

कलात्मक परिपूर्णता :

उपन्यास के पात्र पूर्ण रूप से कल्पित अथवा यथार्थ नहीं होते। उपन्यासकार उन्हें कलात्मक रूप से परिपूर्ण कर देता है। जो काल्पनिक नहीं लगते। तो व्यावहारिक होने का आभास देते है।

पात्रों का चरित्रांकन करने की अनेक विधियाँ है। जैसे -

1) विश्लेषणात्मक –
2) अभिनयात्मक –
3) स्वगत कथनात्मक –
4) आत्म कथात्मक -
5) संवादात्मक -
6) विवरणात्मक –
7) संकेतात्मक -
8) मनोवैज्ञानिक "[7]

उपन्यास के दूसरे तत्व "चरित्र चित्रण" का परिचय देखने के बाद हम कह सकते है कि भीष्मजी के "तमस" उपन्यास के पात्र इन्ही मानदण्डों की कसौटीपर खरे उतरते है। लेखक ने विभाजन कालखण्ड का भयावह चित्र अनेक प्रकार के पात्रों द्वारा उपस्थित किया है। पात्रों के चरित्र की सुक्ष्म विशेषताएँ, मानवता की परख, उनका बाहय और आन्तरिक आश्चर्यजनक रुप, एकता, विभिन्नता का प्रभावशाली चित्रण भीष्मजी ने किया है। जिसमें सजीवता और सशक्तता है।

सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, पारिवारिक पात्रों की स्थितियाँ, प्रतिक्रियाएँ, मानताएँ, विचारधाराएँ स्पष्ट करने में भीष्मजी सफल हुए हैं। "तमस" घटना प्रधान उपन्यास है, जिसमें मानव व्यापारों और क्रिया कलापों को विशेष प्रधानता दी है। उसमें कलात्मकता और दृष्टिकोण की सुक्ष्मता का परिचय मिलता है। समाज बोध की सही सही और उपयुक्त अभिव्यक्ति इन पात्रों द्वारा हुयी है।

चरित्रांकन के लिए भीष्मजी ने विश्लेषणात्मक, अभिनयात्मक, विवरणात्मक, संकेतात्मक, मनोवैज्ञानिक विधिओं का सहारा लिया है। जिन के कारण "तमस" के पात्र प्रसंगानुकूल यथार्थ, व्यावहारिक बन गये हैं। कई पात्र मानवीय गुणों से युक्त हैं। तो कई अधम प्रवृत्ति के भी हैं।

चरित्र चित्रण :

"तमस" उपन्यास में पात्रों का बाहुल्य हैं। अंग्रेजी शासन और हिन्दु-मुसलमान धार्मिक भावना से

निर्माण हुए सांप्रदायिक दंगों के अनुरूप पात्र योजना की गयी है। यह दंगे शहर से गांव की ओर अग्रेसर होते हैं इसी कारण शहरी तथा ग्रामीण लोकजीवन का आतंकग्रस्त चित्रण इसमें है। इसमें जो पात्र है वे विशिष्ट श्रेणी के पात्र है जो सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक परिवेश का उद्घाटन करने में सक्षम बने है। लोगों की विचारधारा, मानसिक संकीर्णता, राग, द्वेष, घृणा, स्वार्थान्धता आदि का विश्लेषण पात्रों के माध्यम से प्रभावी रूप में किया है। "आतंक" ही इस तमस का केंद्रिय तत्व है जो सारे कथानक में तथा पात्रों में व्याप्त है। पात्रों का चरित्रांकन सीमित है, लेकिन प्रतिक्रियाओं को तथा प्रवृत्तियों को विशेष महत्व प्रदान करनेवाले पात्र हैं। हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, म्लेच्छ वर्गोंके पात्रों का चरित्रांकन लेखक की सशक्त सृजन शैली का परिचय देते हैं।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से पात्रों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित कर सकते है। क्षेत्र के आधारपर शहरी और ग्रामीण पात्र। इसमें अंग्रेजी पात्रों में डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड, . उसकी पत्नी लीजा, कॉंग्रेस पार्टी के बख्शीजी, चौधरी, जनरैल, मेहता, रामदास, कश्मीरीलाल, अब्दुल गनी, मुसलमान जाति के मुबारक अली, मौलादाद, एहसान अली, हयातबख्श, खुदाबख्श, हाकिम , करीमखान, शाहनवाज, इत्रफूलेल बेचनेवाला आदि अनेक गौण तथा नगण्य पात्र हैं। आर्य समाज के पात्रों का भी विशेष रूपसे चरित्र चित्रण किया है। इसमें पुण्यात्मा वानप्रस्थीजी, मंत्रीजी, देवव्रत, बोधराज, लक्ष्मीनारायणलाल, रणवीर आदि पात्र है। तो ग्रामीण पात्रों में सिख-मुसलमान पात्रों की भरमार है। इसमें हरनामसिंह, बन्तो, इकबालसिंह, जसबीर, हरिसिंह, तेजसिंह, प्रीतमसिंह, निहंगसिंह, गोपालसिंह, मंगलसिंह, भगतसिंह, ग्रंथी साहिब जैसे अनेक पात्र हैं। जिसके कारण कथानक में वास्तविकता एवं व्यावहारिकता आयी है। पार्टियों के आधारपर कॉंग्रेस, कम्युनिस्ट, मुस्लिम लीग, आर्य समाजवादी, साम्राज्यवादी पात्र इसमें जिनका विवेचन हम बाद में करेंगे। वृत्ति के आधारपर मानवीय गुणों से युक्त पात्र तथा अधम प्रवृत्ति के पात्र। जातीयता के आधारपर नारी तथा पुरूष पात्र ऐसा हम वर्गीकरण कर सकते हैं।

उच्चश्रेणी से लेकर निम्न श्रेणी के पात्र होने के कारण यह कथा अपनी कथा लगती है। इन पात्रों के माध्यम से लेखक ने मानवता की कामना की है। पात्रों के विचारों से लेखक व्याकुल हो उठता है और धर्मनिरपेक्षता की मांग करता है जिनमें एकता, बंधुता एवं शांति हो। यह सांप्रदायिक भेद-भाव व्यक्ति के लिए, समाज के लिए, देश के लिए हानीकारक होता है। समाज में असंतोष फैलता है, व्यक्ति का जीवन भयग्रस्त बनता है। लेखक ने हरबर्ट नामक अमरीकी पादरी और स्थानीय मिशन कालिज के प्रिंसिपल पात्र के माध्यम से इस बात का उद्घाटन किया है। "शहर की हिफाजत का सवाल राजनीतिक सवाल नहीं है, यह राजनीतिक पार्टियों के ऊपर का सवाल है, शहर के सभी लोगों का, नागरिकों का सवाल है। इसमें अपनी अपनी पार्टियों को भूल जाना होगा। सरकार का भी रोल इसमें बहुत

बड़ा है। हम सब को मिलकर शहर की स्थिति को संभालना चाहिए। हमें इसी वक्त लोगों से अपील करनी चाहिए कि वे आपस में नहीं लड़ें।"[8]

रिचर्ड, नत्थू, जनरैलसिंह, बख्शीजी, देवदत्त, रणवीर, शाहनवाज, हरनामसिंह, राजो, मुरादअली जैसे पात्रों का परिचय देकर पार्टी के अनुसार अन्य पात्रों का परिचय दिया है।

(1) **रिचर्ड :-**

इन सांप्रदायिक दंगों का प्रमुख कारण है अंग्रेज नीति। वहाँ का डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड भी इसका एक प्रमुख अंग है। वह अंग्रेज अधिकारियों का प्रतिनिधित्व करता है। उसके पास सूक्ष्म निरीक्षण दृष्टि है। वह भारतीय लोगों की अबोधता से पूरी तरह परिचित है। समाज में धर्म को कितना महत्व यह लोग देते हैं वह उसे मालूम है। वह अपनी योजना से हिन्दु-मुस्लिमों में फूट डालने में कामयाब होता है। सबसे पहले फिसाद जाने अन्जाने के रूपमें उसने ही करवाया था। सलोत्तरी साहब ने मुरादअली को मिलाकर नत्थू चमार से सुअर मरवा दिया और उसे मस्जिद के सामने फेंक दिया। इसकी प्रतिक्रिया के रूपमें मुसलमानोंने गाय को काटा और मंदिर के सामने फेंक दिया अतः इन दंगों की शुरूआत अंग्रेजोंद्वारा ही करवायी गयी। शहर का सद्‌गृहस्थों का एक दल रिचर्ड के पास जाकर इन दंगों को रोक देने की मांग करता है लेकिन वह इन्कार करता है। इसलिए रिचर्ड प्रमुख पात्र के रूपमें प्रस्तुत है।

पुरातत्व प्रेमी/इतिहास प्रेमी : रिचर्ड डिप्टी कमिश्नर है। लीजा उसकी पत्नी है। वह यहाँ का अधिकारी होने के नाते भारतीय समाज का पूरा अध्ययन करता है। उसे भारतीय कला में विशेष रूचि है। वह पुरातत्व, इतिहास तथा निसर्ग प्रेमी भी है। भारतीय जनता की नस्ल उसे पूरी तरह मालुम है। वह लीजा को बताता है कि - "जो लोग मध्य एशियासे सबसे पहले यहाँ आये। नस्ल सक की एक थी। वे आर्य कहलाते थे। ये लोग अपने इतिहास को जानते नहीं हैं, ये केवल उसे जीते भर हैं।"[9] प्रस्तुत अवतरण से ज्ञात होता है कि हमारी आम जनता को यह बात मालुम नहीं वे आपस में सांप्रदायिकता के नामपर झगडते हैं लेकिन रिचर्ड यह सब जानता है। उसे भारतीय इतिहास पूरी तरह मालूम है। जो एक कुशल प्रशासन के लिए अपेक्षित है।

अंग्रेजों का प्रतिनिधि : रिचर्ड ब्रिटिश साम्राज्य का प्रतिनिधि था। वह प्रशासक बनकर लंदन से निर्णित हो कर आनेवाली नीति क्रियान्वित करता है। वह दृढ़तासे काम लेता है भावुक नहीं बनता प्रशासक के लिए सरकारी कारोबार और आपसी कारोबार में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए यह वह अच्छी तरह जान लेता है। इसी कारण एक काम को दूसरे काम से अलग रखता है। और एक भावना को दूसरी भावना से अलग रखता है। यही उसके प्रशासन की विशिष्ठता है।

उत्तम प्रशासक : उसका एक विशेष अनुशासन है। निजी रूचियों को वह संस्कारी काम से अलग रखता

है। हप्तेभर में तीन दिन वह कचहरी चला जाता है। जिला मॅजिस्ट्रेट के नाते मुकद्दमें सुनता है। उनपर न्याय करता है, इण्डियन पैनल कोड की धाराओं को यथावत् लागू करता है। तमस का बूढ़ा करीमखान उनका परिचय देते हुए कहता है "उस की हर बात के पीछे दूर अन्देशी पायी जाती है। जो कुछ वह देखता है उसे आम इंसान नहीं देख पाता।"[10] अंग्रेजों की इसी नजर अन्दाज के कारण मुठ्ठीभर फिरंगियोंने समन्दर पार कर इतने बड़े देशपर शासन किया। उसमें से एक रिचर्ड भी है। वह कभी भी द्विधावस्थामें नहीं पाया जाता। वह अपनी सुझ-बुझ एवं पैनी दृष्टि से स्थिति को समझ लेता है। तथ्यों को पकड़ लेता था। और अपने हित एवं लाभ की सोचता था। प्रशासन के क्षेत्र में मनमें जब कभी द्विधा उठती तो वह अपने विचारों को अपनी डायरी में लिख लेता था लेकिन उसे भावुकता का पूट कभी भी नहीं दे देता। रिचर्ड और लीजा की बातचित से यह बात स्पष्ट होती है।

रिचर्ड : "सिविल सर्विस हमें तटस्थ बना देती है। हम यदि हर घटना के प्रति भावूक होने लगें तो प्रशासन एक दिन भी नहीं चल पाएगा।"

लीजा : यदि 163 गांव जल जायें तो भी नहीं?"

रिचर्ड : तो भी नहीं।"[11]

इस बातचित से स्पष्ट होता है कि प्रशासक मानवीय मूल्यों को महत्व नहीं देते तो शासकीय मूल्यों को महत्व देते हैं। रिचर्ड इन सांप्रदायिक भीषण दंगो के पीछे केंद्र के रूपमें छिपकर अपनी नीति को सफल बना देता है। क्यों कि अंग्रेजों को इन शोकान्तिका के प्रति कोई कर्तव्य नहीं है, उन्हें सिर्फ कर्तव्य है, कुशलता से शासन चलाने से वही रिचर्ड ने भी किया है।

व्यवहार कुशल : सांप्रदायिक दंगों का सूत्रधार रिचर्ड ही है। उसने ही मुरादअली के द्वारा अपने षड़यंत्र को पूरा किया। वह इतना व्यवहार कुशल है कि वह जानता है कि अगर यह लोग धर्म के नामपर लड़ते रहे तो उसी में ही उसकी भलाई है। क्योंकि देश के नामपर भारतीय जनता अंग्रेजों से लड़ती है। जो आपस में लड़ती रहें इसमें अंग्रेज राज की नींव पक्की हो जाएगी। इसी कारण उसने ही सुअर कटवाकर मस्जिद की सीढ़ियोंपर फेंक दिया यह घटना भयानक रूप धारण कर सांप्रदायिक विनाश लीला बनी।

रिचर्ड चाहता तो इस दंगे को रोक सकता था। जब नागरिकों का एक शिष्टमंडळ रिचर्ड से मिलने चला आता है और शांति स्थापना के लिए सरकारी सहयोग चाहता है। उसमें से एक सदस्य बख्शीजी कर्फ्यू लगाने की सलाह देते हैं। रिचर्ड इसे अस्वीकार करता है। वह गंभीरता को जानते हुए भी अन्जान बना रहता है। उल्टे उन्हें ही कहता है कि वे व्यर्थ ही उसके पास आये। उन्हें तो पण्डित नेहरू के पास जाना चाहिए था, क्योंकि वे ही उनके असली नेता है।

लेकिन अंत में इतनी विनाश लीला के बाद रिचर्ड इसमें हस्तक्षेप कर शांति प्रयास में लग जाता

है। वह शहर में कर्फ्यू लगा देता है। लोगों की जान-माल का पता लगवाने के लिए सेंटर खोल देता है। अमन कमेटी बनावा देता है, जिसमें हिन्दु-मुस्लिम-सिख लोगों का समावेश कर देता है। हेल्थ ऑफिसरों को कुओं आदि की सफाई करने का आदेश देता है। और लोगों की दुआएँ लेता है।

वह अमन कमेटी में सांप्रदायिकता के बीज बो देता है। जिसके परिणाम स्वरूप भारत-पाकिस्तान विभाजन हो ही जाता है। बख्शीजीने कहा भी ठिक है -

"फिसाद करनेवाला भी अंग्रेज, फिसाद रोकनेवाला भी अंग्रेज। भूखों मारनेवाला भी अंग्रेज, रोटी देनेवाला भी अंग्रेज, घर से बेघर करनेवाला भी अंग्रेज, घरों में बसानेवाला भी अंग्रेज।"[12]

इस प्रकार रिचर्ड अंग्रेज नीति का प्रतिनिधित्व करनेवाला प्रमुख पात्र है। जो इस सांप्रदायिक दंगों का प्रमुख सूत्रधार है। लेखक ने बड़ी कुशलता के साथ उसका चरित्रचित्रण किया है। मानवीय संबंधों में वह उदार है दाम्पत्य जीवन में असफल है।

दाम्पत्य जीवन में रिचर्ड की असफलता :

उपन्यास में रिचर्ड का प्रशासकीय व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावी बन गया है। लेकिन अपने पारिवारिक जीवन में वह असफल बन गया है। यहाँ का माहौल उसे अच्छा नहीं लगता इस देश के प्रति उसके मन में कोई प्रेम नहीं है। "यह मेरा देश नहीं है। नहीं ये मेरे देश के लोग है।"[13] इस वक्तव्य से स्पष्ट होता है कि वह केवल अपने कर्तव्य को निभा रहा है। उसे पूरी तरह मालूम है कि उसकी पत्नी लीजा इस देश से उब गयी है, उसकी अंग्रेज नीति से भी उब गयी है। जिसकी वजह से वह हमेशा शराब में धूत रहती है। रिचर्ड इस आदत से परेशान है। दोनों के स्वभाव वृत्ति में बहुत बड़ा अंतर है। लीजा मानवी मूल्य महत्वपूर्ण समझती है तो रिचर्ड प्रशासन मूल्यों को महत्व देता है। रिचर्ड की तटस्थ वृत्ति का वह विरोध करती है। दंगो-फसादों की भीषण लीला के बाद रिचर्ड जो ढोंग करता है उसपर वह व्यंग्य करती है। -

"तुम सो जाओ, लीजा, अभी मुझे बहुत काम करना है।"

"इतने गांव जल गये रिचर्ड, अभी भी तुम्हें काम है? अब तुम्हें और क्या काम करना है?"

रिचर्ड ठिठक गया। क्या लीजा व्यंग्य कर रही है।"[14]

इस प्रकार की अनेक घटनाएँ है जो रिचर्ड - लीजा के असफल दाम्पत्य जीवन को उद्घाटित करती हैं। वह एक असफल पति के रूपमें चित्रित किया गया है। अपने घर पहुंचने पर रिचर्ड दुसरी दुनिया में पहुंच जाता था। उसकी निजी जिन्दगी और उसकी समस्याएँ अलग थी। जिनका बाहरी दुनिया से किसी भी प्रकार का संबन्ध नहीं था। उसका बाहय जीवन केवल एक धंदा था। वह निराश बन गया था। वह कहता भी है - "डैम दिस कन्ट्री, डैम दिस लाईफ।"[15] क्योंकि प्रशासन कर्तव्योंको निपटाकर जब वह

घर आता तो लीजा नशे में धूत पड़ी रहती और जिस जगह पड़ी रहती वहाँ पेशाब भी करती, यह देख वह उलझ जाता और निराश बनता है। पत्नी को जिस सुख की अपेक्षा है वह देने में रिचर्ड असफल बनता है।

(2) **नत्थू :-**

"तमस" उपन्यास का दूसरा पात्र है नत्थू जो इस सांप्रदायिक दंगे का उसके अन्जाने में अस्त्र बनाया गया है। अंग्रेजों का पिट्टू मुरादअली नत्थू को झूठ ही कहता है कि "हमारे सलत्तोरी साहब को मरा हुआ सुअर चाहिए डॉक्टरी इलाज के लिए।"[16] लेकिन असल में वह सुअर मस्जिद के सामने फेंक दिया जाता है। जो सांप्रदायिक आग भड़काने के लिए कारण बनता है। लेकिन इस कार्य में नत्थू पूरी तरह निर्दोष है। उसे क्या मालूम कि सुअर किस काम के लिए चाहिए? अपने इस कार्य की परिणति देख वह दुविधाग्रस्त बनता है। उसका अन्तर्द्वंद्व उपन्यासकारने प्रभावी रूपमें दिखाया है जो मार्मिक है। सुअर मार देने का अपराध बोध उसके मन को मथता रहता है। आशंका और निराशा से भरा उसका मन भयानक भयग्रस्त बनता है। वह स्वयं को इस दंगे का मूल समझ बैठता है। लेकिन उसकी पत्नी उसे समझा देती है।

अछूत/चमार जातिका : नत्थू चमार जाति का है। शहर में कोई प्राणी जैसे घोड़ा, गाय, भैस मरती है तो वह उसकी खाल निकालने का कार्य भी करता था। यह काम उसे मुरादअली दिलवा दिया करता था। एक दिन मुरादअली ने आकर उसके हाथ में पांच रूपये का नोट देकर सुअर मारने के लिए कहा। इसी घटना से उपन्यास का भी प्रारंभ होता है। जिसके परिणामस्वरूप भीषण सांप्रदायिक दंगा हुआ। नत्थू इसके लिए स्वयं को अपराधी समझ लेता है। इसी कारण उसका व्यक्तित्व दुविधाग्रस्त बन गया है। बार बार वह पछतावा भी करता है, शराब पिता है। घर में गुमसुम पड़ा रहता है, तो कभी कभी इधर-उधर भटकता रहता है। तो कभी कोठीवाली के पास जाने की भी सोचता है। जिससे मन को कुछ शांति मिल जाय। लेकिन उसका व्यक्तित्व उखड़ा उखड़ा ही बनता जाता है।

द्वंद्वग्रस्त : भीष्मजीने प्रत्यक्ष पध्दतिसे नत्थू का परिचय दिया है। जो उसके मन का द्वंद्व उद्घाटित करता है। " नत्थू परेशान था। अपनी कोठरी के बाहर बैठा वह चिलम पर चिलम फुंके जा रहा था। जितना वह मार काट की अफवाहों को सुनता उतना ही अधिक उसका दिल बैठ जाता है। बार-बार अपने मन को समझाता है। मैं अन्तर्यामी तो नहीं हूँ, मुझे क्या मालुम किस काम के लिए मुझसे सुअर मरवाया जा रहा है। कुछ देर के लिए उसका मन ठिकाने भी आ जाता, लेकिन फिर जब शहर के किसी हादसे की बात सुनता है तो फिर बेचैन हो जाता है। यह सब मेरे किये का फल है।[17] इसी तरह नत्थू का द्वंद्वग्रस्त जीवन लेखक ने प्रभावी रूपमें चित्रित किया है। एक निर्दोष व्यक्ति अपनी उद्विग्नता को,

यातनाओं को असहाय, विवश बनकर जी लेता है। इसका चित्रण लेखक ने यथार्थ एवं मार्मिक रूपमें किया है।

भयग्रस्त : नत्थू का व्यक्तिचित्र आरंभ से अंत तक भयग्रस्त ही बन गया है। उपन्यास की पहली घटना सुअर मारने की है। वह कई घण्टों तक उसे मारने की कोशिश करता है। सुअर का भयानक रूप देखकर डरता है और बाद में सांप्रदायिकता की विनाश लीला देख भयभीत होता है। उसे हमेशा भय रहता है कि अगर किसी को मालूम हो गया कि सुअर उसने ही मारा है तो पुलिस पकड़कर ले जायेगी, इसका भी भय उसे रहता है। उसका भयभीत व्यक्तित्व हमेशा प्रत्येक छोटी-मोटी घटना से डरता है। इस बैचेनी से उसका मन घर से भाग जाने की भी सोचता है। तो कभी अल्ला के पास अपने होनेवाले बच्चें के प्रति दुवाँ मांगता है। नत्थू के दिल की आकुलाहट बहुत ही प्रभावी रूपमें भीष्मजी ने चित्रित की है। जो उसके निर्दोष व्यक्तित्व का परिचय देती है। "वह सचमुच बिसूरते बच्चे की तरह व्यवहार कर रहा था।"[18] उसकी ड़र के मारे टांगे कांपने लगती थी।

लेखकने नत्थू का भावात्मक जो चित्रण किया है। वह मनोवैज्ञानिक बन गया है। उसके मन का संघर्ष, घुटन, अपराध बोध बहुत ही वास्तविक है। लेखक ने इस पात्र के माध्यम से स्पष्ट किया है कि हमारे हाथ से अन्जाने रूपमें एकाद घटना हो जाती है जो सारे राष्ट्र के विनाश के लिए कारण बनती है और उसका अपराध-बोध लिए हमारा मन बैचेन बनता है। हमारे किए का फल और उसका अपराध बोध सारी जिंदगी की शांति खो देता है।

नत्थू आतंक, भय, संशय से इधर उधर भटकता रहता है, उसे शांति नहीं मिलती। और अंत में मारा जाता है। उसकी मानसिकता का चित्रण विस्तार से प्रकरण 13 में हुआ है।

(3) जरनैलसिंह :-

"तमस" उपन्यास में जरनैल का चरित्र भी महत्वपूर्ण बना है। जरनैल कॉंग्रेस का सक्रिय नेता है। वह आदर्श गुणों से युक्त है। वह स्पष्टवक्ता है। उसकी उम्र पचास साल के आस-पास है। उसका न कोई घर था, तथा न बीबी बच्चें थे। हमेशा फटे-पुराने कपडे पहनता था। पैरों में फटी स्लीपर। जूतों के उपर छः इंच पर खाकी पलतून और ऊपर खाकी कोट, सिरपर गांधी टोपी पहनता था। शरीर सूखा हुआ था। आवाज उसकी खोखली - फुसफुसाती और बारीक थी। घनी भौंहों के बीच छोटी-छोटी आँखे थी। बगल में हमेशा छोटा बेंत दबाए वह घुमता रहता था।

लेखक ने जरनैल का वर्णनात्मक प्रत्यक्ष पध्दति से बड़ा प्रभावी चित्रण किया है। एक देशभक्त, सीधे, सरल स्वभाववाले व्यक्ति की विडम्बना का कारूण्यपूर्ण चित्रण किया है। जरनैल की उम्र पचास के उपर रही होगी - पर बरसों की जेल के बाद उसके शरीर में कुछ रह नहीं गया था। शहर

के अन्य काँग्रेसियों को कम से कम बी क्लास मिलता था, जरनैल को हमेशा सी-क्लास में डाला जाता रहा, जिससे वह बीमार भी पड़ता रहा और बालू से भरी रोटी भी खाता रहा पर जरनैल ने न तो तोबा की, न ही अपनी जरनैली वर्दी को छोड़ा। जवानी के दिनों में लाहौर-काँग्रेस के समय वह अपने शहर से लाहौर में वालन्टियर बनकर गया था। नेहरूजी के साथ रावी नदी के किनारे नाचा था और पूर्ण स्वराज्य का नारा लगाया था। उसी दिन से वह वालन्टियर की वर्दी पहनता आया था। दिन अच्छे होते तो वर्दी में कभी सीटी लग जाती, कभी तिरंगे की डोरी बँध जाती। दिन खस्ता होते तो वर्दी धुल तक नहीं पाती। उसे न कोई काम था। काँग्रेस के दप्तर में पन्द्रह रू. महिना प्रचारक का मेहनताना मिलता था। मन में सनक थी, उसी के बलपर जिन्दगी के दुख और क्लेश पार कर जाता था। उसका न घर था न घाट, न बीबी न बच्चा, न काम न धाम। हप्ते में दो-तीन बार कही-न-कही से पिट जाता था। जनरैल अपनी सनक का मारा अपनी छोटी-सी झूर्रियों-भर छाती फैलाये खड़ा रहता था और पसलियों तुड़वाकर आता था।"[18] इस वर्णन से लेखक की पात्र परिचय देने की सूक्ष्म वृत्ति का, निरीक्षण का पता मिलता है। "अपनी बात" में लेखक ने "मेरा प्रिय पात्र" इस निबंध में जरनैल का जिक्र किया है। और जो व्यक्ति अपने परिवेश में सही नहीं बैठता उनके भाग्य की वही बिडम्बना होती है जरनैल भी वैसा ही है। और वह लेखक का प्रिय पात्र है। जो सच्चा राष्ट्रभक्त, निर्भिक स्पष्टवक्ता है।

स्पष्टवक्ता : जरनैल काँग्रेस का सक्रिय नेता है। जब प्रभात फेरी निकलती है तो वह काँग्रेस का झण्डा लेकर नेतृत्व करता है। काँग्रेस, मुस्लिम लीग तथा अंग्रेज लोगों की ढोंगी वृत्ति को वह अच्छी तरह जानता है। और उनका पर्दा-पाश करना चाहता है। वह सनकी वृत्तिवाला है। काँग्रेस पार्टि में काम करने का ढोंग करनेवाले शंकर को कहता है - "तुम गद्दार हो। मैं तुम्हें जानता हूँ। तुम कम्युनिस्ट हो।" अंग्रेज नीति का भी वह विरोध करता है - "तुम बुजदिल हो। यह अंग्रेज की शरारत है। मैं उसका भण्डा फोड़ करुंगा।"[19] इन वक्तव्यों से उसकी निर्भिकता का परिचय मिलता है। वह शहर में तकरीरे करता फिरता रहता था। मुनादी करने के लिए ताँगें में बैठकर चला जाता था। ढोंगी कार्यकर्ताओं के कारनामें सब के सामने स्पष्ट कर देता है। ऐसा करने में वह जरा भी डरता नहीं है। इसी कारण उसकी किसी अज्ञात व्यक्ति से हत्या हो जाती है।

देशभक्त : जरनैल एक कर्तव्यनिष्ठ राष्ट्रीय सेवक है। अपने देश के प्रति उसे गहरी निष्ठा है। शांति, एकता के लिए वह अन्तिम सांस तक प्रयत्न करता है। वह इमानदार, भावुक, संवेदनशिल व्यक्ति है। लेकिन सभी लोग उसे पागल समझे थे। उसकी खिल्ली उड़ाते थे। उसके मन की गहरी वेदना कोई नहीं समझ सकता था। वह कहता है - "मुझे कोई चुप नहीं करा सकता। मैं नेताजी सुभाष बोस की फौज का आदमी हूँ।"[20] मनादी करते हुए कहता है -

"वतन की फिक्र कर ज्यादा मुसीबत आनेवाली है।

तेरी बरबादियों के तजकरे है आसमानों में।।"[21]

इस प्रकार जरनैल सरकार के खिलाफ तकरीरे करता है। देश के खातीर हमेशा जेल में सजा भुगतता है। देश के बड़े बडे नेता जैसे गांधी, नेहरू, सुभाषचंद्र बोस आदि लोगों के प्रति उसके मन में निष्ठा है। गांधी विचार धारा से वह बहुत प्रभावित है। जिस प्रकार गांधीजी कहते है कि "पाकिस्तान मेरी लाशपर बनेगा।" उसी प्रकार जरनैल भी कहता है "मै पाकिस्तान नहीं बनने दूँगा।"[22] इस वक्तव्य से उसकी देशभक्ति, भावात्मक एकता की प्रवृत्ति प्रकट होती है। हिन्दुस्तान के दो टुकडे होकर पाकिस्तान अलग रूपसे बने यह उसे कतई पसंद नहीं है।

जरनैल जिस प्रवृत्ति से देशभक्ति के लिए अपना जीवन त्याग देता है वैसे अन्य नेता नहीं थे। वह अकेला काँग्रेस के वर्ग-चरित्र को ठीक नहीं कर पाता। वह जिस निष्ठा से काम करता है तो लोग उसे पागलपन समझते हैं। उसकी खिल्ली उड़ाते हैं। उसे सनकी एवं विक्षिप्त समझते हैं। जब दंगा-फसाद शुरू हो जाता है तो वह बाहर आकर कहता है "सभी काँग्रेसी गद्दार है जो घरपर बैठे है।" इन्हें बुर्का पहनकर घर में बैठना चाहिए, इनको अपने हाथोंपर मेहंदी लगानी चाहिए। साहिबान, गांधीजी ने कहा है हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई है। इन्हें आपस में नहीं लड़ना चाहिए। मैं आपसे बच्चे, बूढ़े, जवान, मर्द और औरतों सभी से अपील करता हूँ कि आपस में लड़ना बंद कर दें। इससे मुल्क को नुकसान पहुँचता है। देश की दौलत इंगलिस्तान में जाती है, अंग्रेज - यह गोरा बंदर, हमपर हुक्म चलाता है...."[23] "हम एक हैं, हम भाई-भाई हैं, हम मिलकर रहेंगे....।" तभी किसीने उसे "तेरी माँ की" गाली दी और लाठी के एक ही भरपूर वार से उसकी खोपड़ी फोड़ दी। छड़ी कहाँ गयी, और फटी हुई मूँगीया पगड़ी कहाँ गयी और फटे हुए चप्पल कहाँ गये, और फिकरा खत्म किए बिना ही जरनैल वही ढ़ेर हो गया। यही थी जरनैल के जीवन की विडम्बना। सच्चाई की सजा।

(4) बख्शी जी :

बख्शी जी जाति से मुसलमान है। लेकिन उनके मनमें काँग्रेस के प्रति निष्ठा है। वह बुजुर्ग, तजुर्बेदार, शांत, गंभीर स्वभाववाले व्यक्ति है। गांधीजी की अहिंसा वृत्ति से प्रभावित है। जातीय भेदभाव मिटाने के लिए वे विशेष कार्य करते है। वे जिला काँग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी है। उनकी देह तो शिथिल है, लेकिन मन उत्साही है। प्रभात फेरी, तामीरी कार्य करने लिए सब से आगे आते थे। झाडू हाथ में लेकर आँगन बुहारते है, नालियाँ, रास्तें साफ करते है। इस पात्र के माध्यम से लेखक ने स्पष्ट किया है कि जातीय पार्टी महत्वपूर्ण नहीं है तो महत्वपूर्ण है देश की एकता। एकनिष्ठ भावना से बंधुत्वभाव से अगर देश कार्य किया जाय तो बाहय शक्तियों को दहशत मिल सकती है। अंग्रेजों ने शरारत कर सुअर

मारवाकर मस्जिद के सीढ़ीयों पर फिकवा दिया था, बख्शीजी जानते है कि शरारत किसकी है, वे सुअर की लाश वहाँ से हटा देते है और कहते है "लगता है शहर पर चीलें उड़ेंगी। आसार बहुत बुरे हैं।" और उनका चेहरा पहले से भी ज्यादा पीला और गंभीर लगने लगा।"[24] और होता भी उसी प्रकार से।

मुस्लिम लीग लोग बख्शीजी को कहते है "काँग्रेस हिन्दूओं की जमात है। इसके साथ मुसलमानों का कोई वास्ता नहीं है।" तो उसपर बख्शीजी समर्पक उत्तर देते हुए कहते है "काँग्रेस सब की जमात है। हिन्दुओं की, सिक्खों की, मुसलमानों की। आप अच्छी तरह जानते है महमूद साहिब, आप भी पहले हमारे साथ थे।" "मौलाना आजाद क्या हिन्दू है, वह तो काँग्रेस का प्रजिडेण्ट है। आजादी सब के लिए है। सारे हिन्दूस्तान के लिए है।"[25] इन वक्तव्यों से स्पष्ट होता है कि बख्शी जी अंग्रेजों से आजाद होना चाहते है। हिन्दू-मुसलमान भेदभाव से भी आज़ाद होना चाहते है।

शहर में तनाव बढ़ जाता है तो नागरिकों का एक शिष्यमंडल रिचर्ड के पास चला जाता है। उसमें बख्शी जी उनका प्रतिनिधित्व करते हुए सरकार को फौरन कार्रवाई करने की मांग करते है। कफर्यू लगाने की सलाह भी देते है। लेकिन सरकार तटस्थता का रूख अपना लेती है। भीषण दंगों, फिसादों, मारकाट, लूटमार आगजनी के बाद सरकार की तरफ से कफर्यू लगाया जाता है। माल नुकसानी की पूछ-ताछ होती है। तभी बख्शीजी कहते है कि "फिसाद करनेवाला भी अंग्रेज, फिसाद रोकनेवाला भी अंग्रेज, भूखों मारनेवाला भी अंग्रेज, रोटी देनेवाला भी अंग्रेज, घर से बेघर करनेवाला भी अंग्रेज, घर में बसानेवाला भी अंग्रेज , अंग्रेज फिर बाजी ले गया।"[26] कितना सच था बख्शी का कथन।

(5) **देवदत्त :-**

देवदत्त साम्यवाद को स्वीकारने वाला साहसी युवक है। वह माँ बाप का लाडला बेटा है। माँ चाहती है कि इस दंगों, फिसादों में वह घर पर ही बैठे कही बाहर नहीं चला जाया। लेकिन वह मानता नहीं है, उसके पिता की प्रतिक्रिया है कि "सभी गालियाँ देते है, न काम, न धाम। दो-दो पैसे के पौंडियों, मजदूरों, कुलियों को इकट्ठा करता फिरता है, उन्हें लेक्चर झाड़ता फिरता है, हरामी, मुहँपर दाढ़ी नहीं उतरी, लीडर बन गया है, सुअर का बच्चा...।"[27] इससे पता चलता है कि वह कामरेड़ पार्टीका कार्यकर्ता है। गरीबों के प्रति उसके मन में प्रेम है। उसके दिमाग में डायरी थी। वह हाथ मलता, नाक सहलाता, डायरी में एक के बाद एक काम टाँक रहता था।

शहर में जो तनाव है उसे शांत करने की कोशिश वह करता है। उसे मुँह और नाक सहलाने की आदत है। और जब वह अपनी कार्य सूची करना चाहता है तो अपने दोनों हाथ मलने की उसे आदत थी। शहर में अमन रखने के लिए वह काँग्रेस और मुस्लिम लीग के लीड़रों को इकट्ठा करना चाहता है। किसी ने उसे देख दरवाजा बंद किया था, कोई तुनककर बोला था, कम्युनिस्टों को बुरा-भला कहा था

लेकिन उसने अपना काम बंद नहीं किया। वह एक सक्रिय युवक के रूपमें चित्रित हुआ है।

उसने शहर के लोगों की व्याख्या भी की है - "सड़कों पर खुलनेवाले मकान, मध्यमवर्ग के, गलियों में खुलनेवाले मकान निम्नवर्ग के। सड़क के किनारे दो मंजिले जो मकान थे वे हिन्दुओं के और, पीछे गलियों में कच्चे मकान मुसलमानों के ऐसा शहर का उसने विश्लेषण किया है। और वह स्पष्ट करता है कि आर्थिक दृष्टि से हिन्दू संपन्न लोग हैं। उसे मुसलमान लोगों के प्रति विशेष हमदर्दी है।"[28]

वह मध्यमवर्गीय लोगों का, उनके पुराने संस्कारों का जिक्र करता है। परस्पर भेदभाव मिटाकर समाजविकास की कामना करता है। उसकी राय है कि उच्च तथा मध्यमवर्गीय लोग ही धर्म के नामपर लड़ते, लेकिन मजदूर नहीं लड़ते लेकिन खबर मिलती है कि मजदूर की बस्ती में फिसाद हो गया है तो वह कहता है - "अगर मजदूर आपस में लड़ सकते है तो यह विष बहुत गहरा असर कर चुका हैं।"[29] सांप्रदायिकता का विषैला वातावरण और उसकी भीषणता का उसे पूरा ज्ञान है यह बात स्पष्ट होती है। अंत में अमन हो जाने के बाद वह आँकडा बाबू से पुछता है "गरीब कितने मरे और खाते-पीते लोग कितने मरे। इससे कई बातों का पता मिलता है।" वह स्पष्ट करना चाहता है कि दंगों की स्थिति में गरीबों का ही बहुत नुकसान होता वे ही ज्यादा मारे जाते है।

(6) रणवीर :-

रणवीर हिन्दू युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाला पात्र है। उम्र उसकी छोटी है। आँखों में कुतुहल और सरल विश्वास है। वह उत्साही दृढ़ संकल्पी है। अपने बचपन में उसने अनेक शूर वीरों की कहानियाँ सुनी थी। "वह कद का छोटा था इसलिए वह मन ही मन शिवाजी की भूमिका में अपने को देखा करता था। छाती पर बाँहे बांधे, तिरछी आँखों से वह सड़क के आसपास के इलाके का जायजा लिया करता था। किसी किसी वक्त उसके मन में ललक उठती कि कमर में तलवार लटकती हो, चौड़ा कमरबन्द हो, अँगरखा हो, सिरपर पीले रंग की पगड़ी हो और उसपर शिरस्त्राण हो। लेकिन पाजामा और सीधी-सादी कमीज नीचे फटी हुयी चप्पल वीर सैनिक का बाना नहीं था। पर जो अधिकार-भाव उसकी वेशभुषा में नहीं था, उसे रणवीर कड़ककर हुक्म देनेवाली अपनी आवाज से पूरा कर लिया था। फौज की कमाण्डरों की तरह हुक्म देता था, दल के सदस्यों को अनुशासन में रखता था। पीछे-पीछे हाथ बाँधे, तनिक झुककर गहरी चिन्ता में खोया हुआ वह "शस्त्रागार" में ऊपर-नीचे टहलता, वैसे ही जैसे औरंगजेब के साथ लोहा लेने से पहले शिवाजी टहलते रहे होंगे।"[30] रणवीर के इस वर्णन में उसकी प्रभावी, वीरत्व भरी आकांक्षा का प्रभावी चित्रण किया है।

रणवीर शत्रूपर हल्ला किस तरह किया जाता है यह जानता है। उसके मास्टर ने उसे सभी जानकारी दी है। काठी चलाना, छुरा चलाना, शत्रूपर छुपके से वार करना आदि। अपने साथीदारों को वही सिखा देता है "शत्रू की छाती अथवा पीठ को कभी निशाना नहीं बनाओ। वार हमेशा कमर में करो या पेट में। और घुमावदार छुरा घोंपने के बाद उसे अन्दर-ही-अन्दर थोड़ा मोड दो, इससे अँतड़िया बाहर आ जायेंगी। अगर तुम भीड़ में शत्रू पर वार करते हो तो छुरा बाहर खींचने की कोशिश नही करो, उसे वही रहने दो और भीड़ में खो जाओ।"[31]

रणवीर के मास्टर देवव्रत ने उसे दीक्षा दी थी उसके पूर्व उसकी मानसिक दृढ़ता की परीक्षा ली थी। उससे एक मुर्गी काटने के लिए कहा था जिसे उसने बड़ी कठिनाई से काट दी और गुरू की शाबासकी पायी थी। उनके मास्टरने कहा था - "आर्य युवकों के लिए मनसा-वाचा-कर्मणा तीनों प्रकार की दृढ़ता की जरूरत है।"[32] गुरू की दीक्षा के शिक्षा से रणवीर दृढ़ संकल्पी बना था। उसके मन की कमजोरी नष्ट हुयी थी। इंद्र ने इत्रफरोश की बड़ी दयनीय हत्या की जो गरीब आदमी था जैसे उस मर्गी की तरह ही। जो निरपराध था। रणवीर की चेतना से ही इंद्र ने उसे मार दिया। रणवीर का चरित्र हिन्दु युवाओं का प्रतिनिधित्व करनेवाला है।

(7) शाहनवाज :-

शाहनवाज मुसलमान है। अमीर खानदान का है और अमीर लोगों से ही उसकी दोस्ती है, चाहे वह हिन्दू क्यों न हो। उसके मन में गरीबों के प्रति किसी भी प्रकार की दया-माया नहीं है। इस नफरतकीआग में झूलसते हुए श्रीमंत हिन्दू को बचाने की कोशिश तो वह करता है, लेकिन उस हिन्दु नौकर के साथ जो बुरा व्यवहार करता है वह लांच्छनास्पद है। लेखक इस पात्र के माध्यम से समाज में अनेक प्रवृत्तिके व्यक्तियों का चित्रण करना चाहते हैं। ऐसे लोगों का राजनीति एवं धार्मिक बातों से कोई लेन देन नहीं होता लेकिन अमीर गरीब से होता है।

शाहनवाज रईस आदमी था। उसकी मोटर थी जो दंगों-फिसादों में भी बिना किसी डर से यहाँ वहाँ आती-जाती थी। उसका पेट्रोल का ठेका था। लाला लक्ष्मीनारायण लाल, उनकी पत्नी और बेटी विद्या को खतरे भरे मुहल्ले से सुरक्षित स्थानपर ले जाता है। शाहनवाज दोस्तों का दोस्त था, अनेक लोगों के साथ उसका उठना बैठना था। उसका चेहरा रोब बरसता था। उसे देखने से यह नहीं लगता था कि उसके मन में ओछे या क्षुद्र विचार उठ सकते होंगे। वह धीर गंभीर दुनियादार आदमी था। उसके अनेक हिन्दू दोस्त थे। उसका उठना बैठना डिप्टी कमिश्नर तक से था। इस कारण मुसलमान लोग उसे कुछ नहीं कह सकते थे। रघुनाथ नामक हिन्दू उसका दोस्त था। उसकी पत्नी भी शाहनवाज से पर्दा नहीं करती थी। और रघुनाथ को भी गर्व था कि शाहनवाज जैसा मुसलमान उसका दोस्त है। रघुनाथ के पुराने घर में

उनके जेवरों का डिब्बा वे भूल आये थे। वह डिब्बा ला देने के लिए शाहनवाज ने कहां तो वहाँ चला जाता है। वहाँ उनका नौकर मिलखी था। मिलखी की हालत देख उसे बहुत गुस्सा आता है। "न जाने ऐसा क्यों हुआ। शाहनवाज ने सहसा बढ़कर मिलखी की पीठ में जोर से लात जमायी। मिलखी लुढ़कता हुआ गिरा और सीढ़ियों के मोड़पर सिधा दीवार से जा टकराया। जब वह नीचे गिरा तो उसका माथा फूटा हुआ था। और पीठ टूट चुकी थी, क्यों कि जहाँ गिरा वहाँ से वह उठ नही पाया। शाहनवाज उसके पास से निकलकर आया तो मिलखी का सिर नीचे की ओर लटक रहा था और टाँगे आखिरी दो सीढ़ियों से लटक रही थी। मिलखी चूप था, या तो भय से दम तोड़ गया था, या बेहोश पड़ा था या फिर गर्दन की हड्डी टूटी थी।"[33] इस वर्णन से लेखक ने उसके अन्तर्मन की घृणा का प्रभावी चित्रण किया है। वही शाहनवाज रघुनाथ की पत्नी को जेवरों का डिब्बा देता है तो उसे लगता है जैसे वह किसी पुण्यात्मा के दर्शन कर रही है। न जाने शाहनवाज पुण्यात्मा था या केवल उसका ढोंग था?

(४) हरनामसिंह :-

उपन्यास के दूसरे खण्ड में हरनामसिंह का चरित्र सांप्रदायिक दंगों में बरबाद होनेवाले वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाले पुरूष पात्र के रूप में हुआ है। जिसके द्वारा लेखक ने स्पष्ट किया है कि निर्मल, निष्पाप व्यक्ति ही ऐसे कृत्यों में बरबाद होते हैं। हरनामसिंह की इस गांव में चाय की दुकान अच्छी तरह से चलती थी जिसके कारण उसके पास कुछ पूंजी भी थी। गांव का कोई ऐसा आदमी नही था जो आता-जाता हरनामसिंह की दुकानपर न बैठता हो। इस कारण गांव के मुसलमानों पर उसे पूरा भरोसा था। शहर में होनेवाले दंगों की खबर उसे मिली तो उसकी पत्नी बन्तो ने उसे सावधान करना चाहा लेकिन उसने टाल-मटोल दिया। और अन्त में बाहर के मुसलमानों ने जब हमला किया तो उसे अपना घर त्यागना पड़ा। और अपने ही गांव में बेसहारा होकर बाहर के गांव में सहारा ढुंढने निकल पड़ा। साथ में उसकी पत्नी बन्तो भी थी।

इलाहीबख्श गांव में हरनामसिंह रहता था वह मुसलमानों का था। गांव के सभी मुसलमान उसकी इज्जत करते थे। करीमखान उसका सच्चा मित्र था। शहर में दंगों-फिसादों की खबर सुनकर वह भगवान और करीमखान के भरोसे से निश्चिंत था। फिर चलती दूकान छोडकर कैसे जा सकता था। जाता तो कहाँ? उसका बेटा इकबालसिंह मीरपूर गांव में अकेला था। और बेटी जसबीर शहर में जहाँ दंगे हो रहे थे। वह अपनी पत्नी को समझाता है - सुण भागे भारिये, हमने किसी का कुछ देना नहीं है, हमने किसी का कभी बुरा नहीं चेता है, कभी बुरा नहीं किया है। ये लोग भी हमारे साथ कभी बुरी तरह पेश नहीं आये हैं। करीमखान कह गया है - "आराम से बैठे रहो, तुम्हारी तरफ कोई आँख उठाकर भी नहीं देखेगा।" करीमखान से बड़ा मोतबर इस गांव में और कौन होगा? इन्हें गैरत नहीं आयेगी कि हम निहत्थे

12297
A

बूढ़ोंपर हाथ उठायेंगे?"[34] इसी विश्वास के साथ वह गांव में ही रहने का निर्णय लेता है।

हरनामसिंह को अपनी पत्नी के प्रति बेहद प्यार है। वह किसी के उपर बोझ बनकर नही रहना चाहता। अपनी कमाई का खाना उसे उचित लगता है। उसकी उम्र साठ बरस की है। इसी बुढ़ी उमर में वह पत्नी के साथ अपना सुखपूर्ण जीवन बीता रहा था। लेकिन सांप्रदायिक भेदभाव के झमेले में करीमखान ने गांव छोडकर जाने के लिए कहा तभी हरनामसिंह का विश्वास टूट गया। अपने ही गांव में वे दोनों बेसहारा होकर दूसरों के गांव में सहारे के लिए निकल पड़े। बाहर का प्रदेश उन्हें अपरिचित था।उनके चले जाते ही मुसलमानों द्वारा उनकी दूकान लूटकर आग लगा दी जाती है। इसी घटना से स्पष्ट हो जाता है कि सांप्रदायिकता की भेद-भाव नीति मानवीय भावना की हत्या कर देती है। क्या बिघाड़ा था हरनामसिंह ने उनका? उन्होंने इस बूढ़े के प्रति क्यों ऐसा व्यवहार किया? केवल जाति के लिए ही। हरनामसिंह का वक्तव्य बहुत ही मार्मिक है - "जहाँ सब को जानता था, वहाँ किसीने आसरा नही दिया, सामान लूट लिया और घर को आग लगा दी। उन लोगों के साथ तो मैं खेल बड़ा हुआ था।"[35] अपना गांव छोड दोनों ढोक मुरीदपुर में आ पहुंचे। और किसी का दरवाजा खटखटाते आसरा ढुंढने लगे। तभी हरनामसिंह अपनी पत्नी को कहता है - "बन्तो, वे लोग मारने पर उतारू हुए तो मैं पहले तुझे खत्म कर दूँगा, फिर अपने को खत्म कर दूँगा। जीते-जी मैं तुझे दूसरों के हाथ में पड़ने नही दूँगा।"[36] इस वक्तव्य से उसे अपने पत्नी के प्रति कितना प्यार है यह बात स्पष्ट हो जाती है।

ढ़ोक मुरिदपुर में राजो नामक मुसलमान स्त्री उन दोनों को पनाह देती है। जिसकी मानवीय उदारता की प्रशंसा हरनामसिंह करता है। अन्त में दोनों सुरक्षित गुरूद्वारे में पहुंचते है। लेकिन तुर्को ने जो हमला किया उसमें सिक्खों की हार हो जाती है। हरनामसिंह की बेटी भी इसी गुरूद्वारे में थी। वह गांव की स्त्रियों के साथ कुए में कूदकर आत्मसमर्पन करती है। उनका बेटा इकबालसिंह मुसलमानों के हाथ लग जाता है। वे बेटे के साथ गैर वर्तन करते है उसे जबरदस्ती मुसलमान बनवाया जाता है। उनके द्वारा बेटे को इकबाल अहमद नाम दिया जाता है। इस तरह हरनामसिंह पूरी तरह इन दंगों में बेसहारा बन गया।

(9) **राजो :-**

"तमस" उपन्यास में स्त्री-पात्र के रूप में "राजो" का जो चरित्रांकन हुआ है वह मानवीय गुणों का परिचय देता है। राजो के माध्यम से लेखक ने स्पष्ट किया है कि मानवता पूरी तरह मरती नहीं है किसी न् किसी आदमी के दिल में उसकी छूट-पूट किरन दिखाई देती हैं। वह मुसलमान है लेकिन उसका मन धर्म निरपेक्ष है। वह सिख दाम्पत्य को शरण देती है, उनकी रक्षा करती है, उनके मांगल्य की कामना करती है। राजोका चरित्र आदर्शगुणों से युक्त है।

आदर्शनारी :- राजो स्त्री स्वभावानुकूल आदर्शशील, सहृदयी व्यक्तित्व की नारी है। शरणार्थियों के साथ किस तरह सलूक किया जाता है यह वह पूरी तरह जानती है। हरनामसिंह और बन्तो घर के दरवाजें पर दस्तक देते है तो वह दरवाजा खोलकर उन्हें अंदर लेती है। वह उँची - लम्बी ग्रामीण युवती है। लेकिन सहृदयी है। वह अपने समस्त संस्कारों, विचारों, मान्यताओं को भूलकर उन्हें पनाह देने का निर्णय लेती है। और बहु को खाट बिछा देने के लिए कहती है। घर में उसका पति एहसानअली और बेटा रमज़ाना दोनों भी घरपर नहीं है। उसकी बहु अकरों उसे मना करती है, लेकिन राजो उन दोनों को अंदर लेती है, उन्हें लस्सी पीला देती है। और कहती भी है -। "भगवान किसी को घर से बेघर न करें। अल्लाह की कृपा बनी रही तो सब ठीक हो जायेगा।"[37] इस बात से उसके आदर्श गुणों का परिचय मिलता है। उसे अपने पति तथा बेटा की आदत मालूम है। पति तो अल्लाह से डरनेवाला है लेकिन बेटा बहुत विद्रोही है इस कारण एक समय वह दोनों को जाने के लिए कहती है, लेकिन तुरंत अपना निर्णय बदल लेते हुए कहती है - "न जाओ जी, रूक जाओ, तुमने मेरे घर का दरवाजा खटखटाया है, दिल में कोई आस लेकर आये हो। जो होगा देखा जायेगा। तुम लौट आओ।"[38] इस बात से उसकी सहृदयता एवं संवेदनशील ममत्व का परिचय मिलता है।

राजो की मानवीय उदारता :-

बन्तो और हरनामसिंह की स्थिति देखकर उसका मन पिघल उठता है। पति और पुत्र के वापस आने का समय हो जाता है, तो वह उन्हें मियानीपर में छिपा देती है। उसकी बहु जब इसलिए विरोध करती है तो वह कहती है "घर आये को निकाल दूँ?" अल्लाह की दरगाह में सभी को जाना है, खड़ी मेरा मुँह क्या देख रही है, अन्दर से सीढ़ी उठा ला।"[39] बहु उसके हाथ में थामी बंदूक की याद दिला देती है तो हरनामसिंह से वह बंदूक ले लेती है। इतने में ट्रंक लेकर एहसानअली आता है। वह ट्रंक हरनामसिंह की थी जो लूट लायी थी। हरनामसिंह उसकी चावी दे देता है। लेकिन राजो उसे खोल नहीं लेती। राजो का पति एहसानअली भी उनपर एहसान कर बेटे की डर से उन्हें भूसे की कोठी में छिपा देने की सलाह देता है। राजो उन्हें छिपा देती है लेकिन उसकी बहू अंकरों अपने पति को सब कुछ बता देती है। तो बेटा क्रोधित हो उठता है, और उन्हें मारने के लिए कुल्हाडी ले आता है। तो राजो बीच में आकर समझौता करती हुयी बताती है - "तु क्या चाहता है, रमजाना? घर में खून करेगा? घर में पनाह लेनेवाले को मारेगा? यह आदमी हमारे जान पहचान का है, हम इसके देनदार रहे हैं।"[40] रमजाना ने भी माँ की बात मान ली। मजहबी जनून और नफरत के इस माहौल में एक पतलीसी लकीर थी जिसे रामजाना भी पार नहीं कर सका। श्याम के वक्त उन दोनों को राजो ने गांव की सीमा के बाहर पहुंचा दिया। उनके ही ट्रंक से निकाले हुए गहनें उन दोनों को वापस दे दिये। "मैं नहीं जानती, मैं तुम्हारी जान बचा

रही हूँ, या तुम्हें मौत के मुँह में झोक रही हूँ। चारों तरफ आग लगी है। ये तुम्हारे ट्रंक से मिलें तुम्हारे गहने है। तुम्हारे आगे कठिन समय है। पास में दो गहने हो तो सहारा होगा जाओ, रब्ब राखा।"[41] यहाँ राजो के मानवीय उदारता के गुणों का परिचय मिलता है।

(10)मुरादअली :-

"तमस" उपन्यास में भीष्मजीने मुरादअली का चरित्रांकन "देशद्रोही" व्यक्ति के रूपमें किया है। मुरादअली अंग्रेज सरकार का चमचा है। "देशद्रोही" व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करनेवाला वह एक पात्र है। वह अंग्रेज साहब के कहनेपर सांप्रदायिक दंगा कराने में सहायक है। उसका वह कार्य घृणास्पद है।

मुरादअली नत्थू चमार को कहता है कि "हमारे सलोत्तरी साहब को एक मरा हुआ सुअर चाहिए, डॉक्टरी काम के लिए और उसने सुअर मारने के लिए नत्थू के हाथ में पांच रूपये दे दिए। नत्थू इन्कार नही कर सका क्योंकि मुरादअली से उसे रोज काम पडता था, कभी शहर में घोड़ा, गाय, भैंस मरती तो मुरादअली खाल निकालने का काम दिलवाता था। नत्थूने सूअर को मारने का काम किया और उसे दूसरे आदमी द्वारा छकड़े में ले जाकर मस्जिद की सीढ़ियों पर डलवाकर सांप्रदायिक दंगे का प्रारंभ कर दिया जाता है।

मक्कार :- मुरादअली बेइमान, मक्कार और पाजी व्यक्ति है। उसके किए के परिणाम स्वरूप सैकडों लोग मारे जात हैं। हजारों बेघर हो जाते हैं। लाखों की संपत्ति नष्ट हो जाती है। इस शोकान्तिका के पीछे मुरादअली का बड़ा हाथ है। इस फ़िसाद की जड़ मुरादअली ही है। उसे अपने किएपर किसी भी प्रकार का तनिक भी पश्चाताप नहीं है। नत्थू अपने किएपर पश्चाताप व्यक्त करता है और जब वह मुरादअली को रास्ते में देख उसे पूछने के लिए दौड़ता है तो उसकी तरफ वह देखता भी नहीं। अन्जान बन वहाँ से चला जाता है। इससे मुरादअली की निर्लज्जता का परिचय मिलता है।

सांप्रदायिक हमलों के बाद अंग्रेज सरकार द्वारा शांति प्रस्थापित करने के लिए अमन कमेटी बनवायी जाती है। उस अमन कमेटी में मुरादअली ड्राइवर के पास बैठकर शांति स्थापना के नारे देता है। "तभी ड्रायवर के साथ वाली सीटपर बैठे मुरादअली ने नारे लगाना शुरू कर दिया और गुंजते नारों के बीच अमन की बस अपने शांति अभियानपर निकल पड़ी।"[43]

इस प्रकार मुरादअली के देशद्रोही व्यक्तित्व का उद्घाटन लेखकने बड़ी कुशलता के साथ किया है। देशद्रोही-देशभक्त बनते हैं। इन पात्रों के अलावा इस उपन्यास में अनेक गाँव तथा नगण्य पात्रों की भी भरमार हैं। इसमें हर एक वर्गका प्रतिनिधित्व करनेवाला पात्र हैं जो व्यक्तिचित्रण की यथार्थता का परिचय देते हैं। समाज में विभिन्न जाति, धर्मों, पंथों, प्रवृत्तियों, विचारधाराओं के लोग और

उनका व्यक्तित्व लेखक ने सूक्ष्म दृष्टि से अंकित किया है। इसमें अनेक पार्टियों के लोग हैं -

(1) **कॉंग्रेस पार्टी :-** भारत देश भर पार्टी कॉंग्रेस के कार्यकर्ता थे। जो नेहरू, गांधीजी के विचारों से प्रभावित थे। इनमें जो सदस्य थे उस में से कोई एकनिष्ठ भी थे तो कोई ढोंगी थे। सभी जाति के लोग इस में थे। हिन्दू मुसलमान सिख। पंजाब में हिन्दू मुसलमान सांप्रदायिक भेद-भाव निर्माण हुआ। पाकिस्तान की मांग होने लगी। भारत की आजादी के लिए जो कदम उठाये गये, तभी कॉंग्रेस ने विशेष कार्य किया। 'तमस' उपन्यास में इन लोगों का परिचय वास्तविक रूप में दिया है। चौधरी हयातबख्श, रामदास, मेहता, जरनैल, बख्शी, कश्मीरीलाल अब्दुलगणी इस पार्टी के पात्र है जो तामीरी काम करते हैं, प्रभात फेरी निकालते हैं।

(2) **मुस्लिम लीग :-** मुस्लिम लीग के लोगों ने पाकिस्तान की स्वतंत्र मांग की। और मुसलमानों का संगठन किया है। वे कॉंग्रेस को हिन्दुओं की जमात है। समझते थे। इसमें वे अंग्रेजों को कोई दोष नहीं देते थे। 'हमारा अंग्रेजों ने क्या बिगाड़ा ओए? हिन्दू मुसलमान की अदावत पुराने जमाने से चली आ रही है। काफिर है और जब तक दीन ईमान नहीं लायेगा वह दुश्मन है। काफिर को मारना सवाब है।'[44] इस तरह वे कट्टर मुसलमान थे। उन्होंने इस देश में आकर हिन्दुओं की हत्या की, उन्हें जबरदस्ती मुसलमान बनवा दिया जिस के कारण यह नफरत की आग फैल गयी। मुबारक अली, मौला दाद, हयातबख्श आदि इनके नेता हैं। रमजाना, नूरदीन, इमानदीन, अल्लाहरक्खा आदि और पात्र हैं। तुर्की सैनिक कों की अमानवीय कृत्यों का भी इसमें वर्णन किया हैं। मुरादअली की मक्कारी भी है।

(3) **सिख समाज :-** सिख धर्म खालसा धर्म है। मुसलमानों ने जो अत्याचार किए उनकी रक्षा करने के लिए सिख धर्म की निर्मिती हुयी। सिख धर्मगुरूने धर्मयुध्द की आवश्यकता स्वीकार करते हुए मुसलमानों के विरूध्द युध्द करना धार्मिक कर्तव्य समझते हैं। मुसलमानों ने सिख धर्म गुरू को जिस क्रूरता के साथ मार दिया उसी नफरत से मुसलमान-सिखों का संघर्ष आज तक चलता आया है। इसका परिचय लेखकने इस प्रकार दिया है - 'यह लड़ाई ऐतिहासिक लड़ाइयों की शृंखला में एक कड़ी थी। लड़नेवालों के पाँव बीसवी सदी में थे, सिर मध्य युग में।'[45] सिखों और तुर्को के बिच जो घमासान युध्द हुआ उसका परिणाम भीषण था। गांव के युवकों की हत्या हुयी, बच्चों, स्त्रियों ने कुएँ में कूदकर आत्महत्या कर दी।

सिख संप्रदाय के लोगों का वर्णन उपन्यास के दूसरे खण्ड में ज्यादा हुआ है। इसमें हरनामसिंह, बन्तो, उनका बेटा इकबालसिंह, बेटी जसबीर, किशनसिंह, हरिसिंह, तेजसिंह, प्रीतमसिंह, निहंगसिंह, गोपालसिंह, भगतसिंह, पंसारी, मंगलसिंह, बजाज, छोटा ग्रंथी, सोहनसिंह आदि इसके पात्र हैं।

आर्य समाज :-

आर्य समाज ने हिन्दू धर्म की रक्षा तथा पुर्ननिर्माण के लिए विशेष कार्य किया है। हिन्दू धर्म की सांस्कृतिक महत्ता उन्होंने उद्घाटित की। समाजसुधार की भावना का जिक्र उन्होंने किया। "तमस" उपन्यास में इस पार्टी के प्रतिनिधित्व करने वाले पात्र है पुण्यात्मा वानप्रस्थीजी, मंत्रीजी, देवव्रत, रणवीर, बोधराज, लाला लक्ष्मीनारायणलाल, धर्मदेव, मनोहर, इंद्र, शम्भू -आदि।

शहर में रोज होनेवाला "शान्तिपाठ" आर्य समाज लोगों का दृष्टिकोण वर्णित करता है। जिसमें भारतीय संस्कृति का सार था। सत्संग का मंत्रपाठ वानप्रस्थजी करते थे। वे संस्कृत के ज्ञाता थे। उन्होंने सभी वेदांग पढ़ लिया था। सभी सभासदों को ये मंत्र कण्ठस्थ करवा दिये थे।

"ॐ द्यौ शान्ति पृथ्वी, शान्तिरापः

शान्तिरौषधयः, शान्ति वनस्पतिः"[46]

लेकिन अंतरंग सभा में उन्होंने नगर की बिगड़ती स्थिति की ओर संकेतकर अपनी-अपनी रक्षा का प्रबंध करने की सलाह पुण्यात्माजी ने दी। हिन्दुओं की कमजोरी का जिक्र किया। "यही हम हिन्दुओं में बहुत बड़ी कमजोरी है। हम प्यास लगने पर कुआँ खुदवाते हैं।"[47] और युध्द की तैय्यारी करने के लिए युवकों को प्रवृत्त किया।

कम्युनिस्ट पार्टी :-

कामरेड समाज को गरीब वर्ग का साथी माना जाता था। इन लोगों ने साम्यवाद की मांग की और उसी के अनुरूप एकता तथा समाज संगठन के लिए विशेष कार्य किया है। "तमस" में देवदत्त, रामनाथ, जगदीश, अजीज, हरबंससिंह, मीरदाद आदि इस विचारधारा के पात्र है। जो हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए प्रयत्नशील है।

साधारण पात्र :-

इन पात्रों के अलावा साधारण पात्रों की बहुलता इसमें है। वे आम जनता का चित्रण करने के लिए विशेष सहायक बनें हुए हैं। नत्थू, उसकी पत्नी, फकीर, कालू तेली, खानसामा, चपरासी, हरबर्ट, गाड़ीवान, बाबू, खुदाबख्श, हाकिमसिंह की पत्नी, गोरखा चौकीदार, नानबाई, भूसा, खिज्र, करोमखान, पीरसाब, नानकु, लाला लक्ष्मीनारायण की पत्नी, बेटी विद्या, फतह दीन, रघुनाथ, रघुनाथ की पत्नी, उनका नौकर मिलखी, इत्रफरोश, आदि आम जनता के पात्र हैं। विभाजन के नामपर जो क्रूर अत्याचार हुए, गरीबों की जो शोकान्त कथा घटी, उसका प्रभावी चित्रण करने के लिए हर पात्र अपना-अपना योगदान देने के लिए सफल बना है। भीष्मजी ने जनवादी लेखक के रूप में सामाजिक यथार्थ को चित्रित किया है। इन में साधारण जनता की दयनीय स्थिति का चित्रण बहुत ही कारूण्यजनक बन गया है।

निष्कर्ष :- "तमस" की पात्र योजना लेखक की कल्पनाशक्ति एवं प्रतिभा का परिचय देने में सक्षम है। केवल पाँच दिनों में सांप्रदायिक दंगों की भीषणता लेखक ने चित्रित की है। कथानुकूल एवं संदर्भानुकूल पात्रों की योजना उसमें वास्तविक रंग भर देती है। समाज में किन किन प्रवृत्तियों के लोग होते हैं, उनकी विचार प्रवृत्ति, संकुचित वृत्ति, राग, द्वेष, घृणा, स्वार्थान्धता कितनी घटिया होती है इसका उद्‌घाटन करनेमें भीष्मजी सफल बन गये हैं।

"तमस" में पात्रों का बाहुल्य हैं। लेकिन प्रत्येक पात्र अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें शहरी, ग्रामीण, अमीर, गरीब, अधम, उदात्त, काल्पनिक, यथार्थ आदि प्रकारके पात्र हैं। ऐसे पात्र आज भी समाज में विद्यमान हैं। इन पात्रों के माध्यम से लेखक हमारी कमियों की ओर संकेत कर उन्हें दूर कर देने की मांग करता है। और हमारा समाज मानव धर्म से युक्त होने की अभिलाषा करता है जिनमें एकता हो, अपनत्व एवं बंधुभाव हो यह स्पष्ट कर देता है।

आज़ादी के पूर्व अंग्रेज-नीति ने जो फूट नीति अपनायी थी उसका चित्रण रिचर्ड नामक अंग्रेजी अफसर के माध्यम से स्पष्ट किया है। जिससे स्पष्ट होता है कि राजनीतिक मूल्य मानवी मूल्यों से महत्वपूर्ण समझें जाते थे। इस उपन्यास का दूसरा पात्र नत्थू इस सांप्रदायिक दंगों का अस्त्र बनवाया गया था। लेकिन उसकी विडम्बना यह है कि उसे इस बात का कुछ पता भी नहीं था, जब यह बात उसे मालूम होती है तो वह दुविधाग्रस्त बनता है। वह बेचैन हो उठता है। उसका भावात्मक एवं मनोवैज्ञानिक चित्रण बहुत ही सुंदर बन पड़ा है। एक देशभक्त एवं निष्ठावान पुरूष के रूपमें जरनैल का चित्रण, हरनामसिंह का निष्पाप व्यक्तित्व, राजो की मानवीयता, मुरादअली की मक्कारी एवं देशद्रोही वृत्ति, लीजा का अकेलापन, बख्शीजी मुसलमान होते हुए भी उनकी काँग्रेस के प्रति निष्ठा, आर्य समाजी दृष्टिवाले वानप्रस्थीजी, देवव्रत, रणवीर, बोधराज आदि पात्र हैं। मुसलमान एवं सिख लोगों का भी प्रसंगानुकुल सुंदर चित्रण इसमें हुआ है।

भीष्मजी ने पात्रों का चरित्रांकन उनके क्रिया कलाप, व्यवहार की दृष्टिसे किया हैं। जिनमें मानवीय गुण, अवगुण कैसे निर्मित होते है, स्थिर रहते है, परिवर्तित होते है अथवा विकसित होते हैं इन बातों का यथार्थ चित्रण कर पात्रों की सजीवता स्पष्ट की है। पात्रों में बौध्दिक, भावुक और हताश आदतों का संमिश्रण है। भीष्मजी ने "तमस" के लिए जो पात्र चुने हैं वे जाति, वर्ग, धर्म, राजनीति का प्रतिनिधित्व करनेवाले पात्र हैं। उनके सामान्य और सूक्ष्म विशेषताओं का परिचय दिया है। जो भीष्मजी के जीवन अनुभव के व्यापक परिवेश का परिचय देते हैं। समाज से जुड़े यह पात्र विकृत, असमर्थ, असामाजिक समस्याओं को प्रकट करते हैं। जिससे जीवन की सरलता और जटिलता स्पष्ट करने में

भीष्मजी सफल हुए हैं।

भीष्मजी ने पात्रों का परिचय अनेक वर्गों के द्वारा किया है। जिनमें शहरी, ग्रामीण, धार्मिक पुरूष तथा स्त्री पात्र मानवीय और अमानवीय गुणों से युक्त है। जो कथानुकूल, स्वाभाविक, सप्राण, यथार्थ, द्वंद्वात्मक, रोचक, परिपूर्ण गुणोंसे ओत-प्रोत है। जिनका भीष्मजी ने विष्लेषणात्मक, अभिनयात्मक, आत्मकथात्मक, विवरणात्मक, सांकेतिक, मनोवैज्ञानिक विधियों के द्वारा अंकन किया है। जो पाठक के हृदय को प्रभावित कर सोच-विचार करने के लिए प्रेरित करते है। उनके सुख से सुखी, दु:ख से दु:खी बना देते हैं।

कथानक की सशक्तता स्पष्ट करने के लिए पात्रों का योगदान महत्वपूर्ण होता है। भीष्मजी ने "तमस" में पात्रों का सामाजिक दृष्टिकोण से चुनाव किया है, जिनमें पात्रों की भारमार इसलिए है कि वे समाज के हर स्तर का, अच्छे बूरे वृत्तियों का, गुत्थियों का मनोविज्ञान के आधारपर स्पष्टीकरण कर देते हैं। उनका पारस्परिक रूप बहुत ही वास्तविक बन गया है। धर्म का ढोंग, पाखण्ड स्पष्ट कर धर्म को उदात्तता, सच्चाई, गंभीरता स्पष्ट करने में भीष्मजी सफल हुए हैं। भीष्मजी की दृष्टि की सूक्ष्मता, प्रतिभा, निर्माण कौशल्य की सशक्तता स्पष्ट होती हैं।

पात्रों का चरित्रांकन करते समय कई जगह गलतियाँ तो हो गयी लेकिन वह नगण्य हैं। जिसका स्पष्टीकरण चौथे अध्याय में किया है।

- - -

2.3 "तमस" उपन्यास के संवादों की समीक्षा :-

उपन्यास का कथानक मानव जीवन की घटनाओं पर आधारित होता है। उपन्यासकार पात्रों का चरित्र उद्घाटन करने के लिए संवाद योजना का कलात्मक प्रयोग करता है। दो या दो से अधिक पात्रों के बीच जो वार्तालाप चलता है उसे संवाद तथा कथोपकथन कहा जाता है। उपन्यास में गंभीर पात्रों की भाषा वास्तविक जीवन का स्पष्टीकरण करती है। संवादों से

1) कथानक का विकास:

2) पात्रों का चरित्र :

3) वातावरण की सृष्टि :

4) लेखक का मंतव्य:

स्पष्ट होता है। संवादों के कई गुण अथवा विशेषताएँ डॉ. प्रताप नारायण टण्डन ने स्पष्ट किए हैं -

"1) **उपयुक्तता** - उपन्यासकार कथोपकथन को चमत्कार सृष्टि का महत्वपूर्ण माध्यम मानकर उनका उपयोग उपन्यास की घटना, अवसर तथा वातावरण के उपयुक्त बना देता है।

2) **स्वाभाविकता** - संवादों में वास्तविक गुण तभी आ सकता है, जब उसका विषय कृत्रिम या कल्पना द्वारा गढ़ा हुआ न हो।

3) **संक्षिप्तता** - कथोपकथन का संक्षिप्त होना उसकी प्रभावात्मकता में वृध्दि करता है। लम्बे कथोपकथन अस्वाभाविक और ऊब पैदा करनेवाले होते हैं।

4) **उद्देश्यपूर्णता** - उद्देश्यरहित कथोपकथन फीके और अनावश्यक प्रतीत होते हैं।

5) **सम्बध्दता** - उपन्यासकार जिस बात को कहना चाहता है उसमें कथा और पात्रों से किसी न किसी प्रकारका प्रत्यक्ष पारस्परिक संबंध अवश्य होना चाहिए।

6) **अनुकूलता** - संवाद पात्रों के सामाजिक, बौध्दिक और सांस्कृतिक स्वरूप के अनुकूल होने चाहिए।

7) **मनोवैज्ञानिकता** - मन का सुक्ष्म विश्लेषण इसमें होता हैं।

8) **भावात्मकता** - भावात्मक चेष्टाएँ एवं आकुलता के चिन्ह ही हृदय की बात को कह देने में समर्थ होते हैं।[48]

"तमस" उपन्यास में भी उपर्युक्त बातों का प्रभावी चित्रण मिलता है जो "संवाद" तत्व के लिए आवश्यक होती है।

भीष्म साहनी के "तमस" उपन्यास में घटनाएँ प्रमुख हैं। सांप्रदायिक दंगों का वर्णनात्मक चित्रण हैं। इसमें कथोपकथन को कम स्थान मिला हैं, फिर भी जो भी संवाद हैं, वही नाटकीय, प्रभावी,

एवं भावों का उद्घाटन करनेवाले हैं। जिनके कारण घटनाक्रम में स्वाभाविकता आयी है। पूर्व घटनाओं की सूचना तथा विगत घटनाओं पर प्रकाश डाला गया है। वर्तमान घटनाओं की समीक्षा तथा उनका महत्व इन संवादों द्वारा ही प्रकट हुआ है। पात्रों की मानसिक स्थितियोंका परिचय कथोपकथनसे ही मिलता है। भीष्म साहनी ने कलात्मक एवं रोचक संवादों की योजना की हैं। जो सरल, सुबोध, संक्षिप्त, प्रवाही, भावानुकूल तथा संप्रेषणीय हैं।

भीष्मजी ने प्रसंगानुरूप संक्षिप्त एवं दीर्घ संवादों की योजना की हैं। इनमें किसी भी प्रकार की जटिलता एवं क्लिष्टता नहीं हैं। घटना तथा पात्रों का विश्लेषण इन संवादों के कारण प्रभावी रूपमें हुआ है। इसमें न व्यर्थ विस्तार है न व्यर्थ सीमा एवं संकुचितता मिलती है।

कथाविकास में सहायक संवाद :-

संवादों की योजना लेखक इस प्रकार करता है कि जिससे दृश्य एवं कथाको सजीवता प्राप्त हो। भीष्म साहनी ने इस प्रकारके संवादों द्वारा कथाका पर्याप्त विकास किया है। संवाद प्रसंगानुरूप ही बने हैं। इसमें व्यर्थ का विस्तार नहीं है। भूत, वर्तमान तथा भविष्य की घटनाओं के माध्यम से संवादों की महत्ता प्रकट होती है। रिचर्ड लीजा के संवादों द्वारा लेखक ने भारत की स्थिति, धार्मिकता एवं संस्कृति का परिचय दिया है -

"क्या आज कल वहाँ मेला लगा है?"

"हाँ, लगा है, पर इन दिनों जाना ठीक नहीं।"

"क्यों?"

"इन दिनों हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच तनाव पाया जाता है। दंगा फसाद का ड़र है।" लीजाने हिन्दुओं और मुसलमानों की स्थिति के बारे में सुन रखा था। लेकिन वह इनके बारे में जानती बहुत कम थी।

"मैं तो अभी तक हिन्दू और मुसलमान को अलग-अलग से पहचान भी नहीं सकती। तुम पहचान लेते हो रिचर्ड, कि आदमी हिन्दू है या मुसलमान?"

"हाँ, मैं पहचान लेता हूँ।"

"घर का खानसामा क्या हिन्दू है या मुसलमान?"

"मुसलमान है।"

"तुम कैसे जानते हो?"

"उनके नाम से, फिर उसकी छोटी सी दाढ़ी से, उसके पहनावे से भी, फिर वह नमाज पढ़ता है, यहाँ तक कि उसके खान-पान के तरीके भी अलग है। मुसलमानों के नामों के अन्त में अली, दीन,

अहमद ऐसे शब्द लगे रहते हैं जब कि हिन्दुओं के नामों के पीछे लाल, चन्द, राम लगे रहते हैं। रोशनलाल होगा तो हिन्दु, रोशनदीन होगा तो मुसलमान, इकबालचन्द होगा तो हिन्दु इकबाल अहमद होगा तो मुसलमान।'49

इन संवादों में मार्मिकता है। जानकारी है। कथा विकास के साथ यथार्थ जाति परिचय दिया है। जो जातीयाँ सांप्रदायिकता के विषैले बहकावे में आकर बाद में जो दंगा, फिसाद का वर्णन है उसके लिए कारण बनती है। कथानक के आरंभ के बाद उसके विकास को व्यक्त करनेवाले यह संवाद हैं।

पात्रों का चरित्र विश्लेषण करनेवाले संवाद :-

भीष्मजीने संवादों द्वारा पात्रों का चरित्रांकन बड़ी कलात्मकता के साथ किया है। पात्रों के विचार, रहन, सहन, उनकी चारित्रिक विशेषताएँ, भावुकता, कर्तव्यनिष्ठा, सहृदयता, मानवीयता, अमानवीयता, निष्ठुरता, घृणा, द्वेष, आन्तरिक तथा बाहय चरित्र का प्रभावी उद्घाटन भीष्मजी ने संवादोंके माध्यम से किया हैं। हरनामसिंह अपनी पत्नी के साथ एक मुसलमान के घर में पनाह लेता है। घरवाली राजो और उनके संवाद भी महत्वपूर्ण है जिनके द्वारा लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि इस सांप्रदायिकता की आग में मानवता पूरी तरह नष्ट नहीं हो गयी है तो वह जिंदा भी है -

"भला हो तुम्हारा बहन, तुम्हारा किया हम कभी नहीं उतार सकेंगे।" "रब्ब घरों बेघर किसी आँ न करे। रब्ब दी मेहर होई ताँ सब ठीक हो जायेगा। (भगवान किसी को घर से बेघर न करे। अल्लाह की कृपा बनी रही तो सब ठीक हो जायेगा)"

औरत अभी भी लस्सी का कटोरा हाथ में पकडे बन्तो के सामने खड़ी थी। लस्सी के कटोरे की ओर देखकर बन्तो असमंजस में पड़ गयी। बन्तो ने आँखें उठाकर पति की ओर देखा, उसका पति उसी की ओर देख रहा था। मुसलमान के हाथ से कटोरा कैसे ले ले? उधर रात भर की थकान, हलक सूख रहा था। उनकी झिझक को घर की औरत समझ गयी"

"तुम्हारे पास कोई बर्तन हो तो उसमें डाल लो। इधर गांव में पण्डित की दुकान है। अगर वह घर पर हुआ तो मैं उससे तुम्हारे लिए दो बर्तन ले आऊंगी। पर क्या मालूम वह मिलता है या नहीं। हमारे हाथ का नहीं लो, पर दिन-भर भूखों कहाँ पड़े रहोगे?"

इसपर हरनामसिंह ने हाथ बढ़ाकर कटोरा ले लिया।

"तेरे हाथ का दिया अमृत बराबर है बहन, तुम्हारा किया कभी नहीं उतार सकते।'50

घर के मर्द हिन्दुओं पर बलवा करने गये हैं। वे हिन्दुओं की हत्या करते हैं, उनका माल लूट लेते हैं, उन्हें आग लगा देते हैं तो उनकी ही घरवाली दो असहाय हिन्दुओं को सहारा देती है। इसमें मानवीयता की झलक ही मिलती है।

वातावरण की सृष्टि करनेवाले संवाद :-

उपन्यासकार घटनाओं में वास्तविकता लाने के लिए कथोपकथन से सजीव वातावरण की निर्मिती करता है। 'तमस' में तो प्रारंभ से अंत तक आतंकयुक्त भयावह वातावरण है, जो सांप्रदायिकता की भीषणता का चित्रण करता है। हिन्दु मुसलमानों का परस्पर राग, द्वेष, घृणा से भरा संघर्षयुक्त जो संबंध है वह बहुत ही दर्दनाक है। सांप्रदायिकता की शोकान्तिका चित्रित करनेवाला वातावरण द्रष्टव्य है - 'स्थिति में पहले से कहीं अधिक उग्रता आ गयी थी। सडकों-की-सड़के सूनी पड़ी थी। न कोई दुकान खुली थी, न कहीं टांगा-मोटर चल रही थी। अगर किसी दुकान के किवाड़ खुले हों तो समझ लो लुट ली गयी है। अगर लाठियाँ लिए कुछ लोग खड़े हो तो समझ लो उन्हीं के संप्रदाय के लोगों का वह मुहल्ला है और जहाँ वे खड़े हैं, वहाँ से दूसरे संप्रदाय के लोगों का मुहल्ला शुरू हो जाता है। पर सभी मुहल्ले यों बँटे हुए नहीं थे। सड़के किनारे-किनारे के पक्के दो मंजिला मकान हिन्दुओं के, पीछे गलियों में कच्चे मकान मुसलमानों के, या देवदत्त की शब्दावली में, सड़कोंपर खुलनेवाले मकान मध्यमवर्ग के, गलियों में खुलने वाले मकान निम्न वर्ग के। '

'देवदत्त।' चौक के बाये हाथ से किसी ने आवाज लगायी। सायकल पर बैठे बैठे जमीनपर पैर रखकर देवदत्त रूक गया।

'आगे मत जाओ, एक आदमी मरा पड़ा है।

हाथ में लाठी उठाये, ठिगने कद का एक आदमी सड़क पर आ गया।

'कहाँ पर?'

'चौक के पार, ढलान पर।'

'कौन है?'

'मुसलमान है, और कौन है? तुम इस वक्त कहाँ जा रहे हो?'

'मैं अपने काम से पार्टी आफिस जा रहा हूँ।'

'एक हिन्दु उस तरफ कब्रिस्तान में मरा पड़ा है।' कहते हुए ठिगने कद के आदमी ने कहा 'तुम मुसलमानों के हम में बोलते थे। अब उनसे जाकर कहो 'हमारी लाश दे जायें, अपनी उठा ले जाये।'...

'उनसे जाकर कह दो, हमारा एक मरेगा, हम उनके तीन मारेंगे।' 51

मनोवैज्ञानिक संवाद :-

'तमस' में भावात्मक संवादों की योजना की है। जो कि मनोवैज्ञानिक बन गये हैं। अपराध, पश्चाताप, चिंता, आशा, आत्मसमर्पण या बलिदान से युक्त संवाद हैं। जिनमें परेशानी ही ज्यादा है।

नत्थू और उसकी पत्नी के वार्तालाप ऐसे ही हैं -

नत्थू अभी भी चूप बैठा था।

"तुम बोलते क्यों नहीं? तुम इतनी देर बाहर रहें, मैं मछली की तरह तड़पती रही हूँ।"

नत्थू ने आँख उठाकर अपनी पत्नी की ओर देखा। एक बाढ़ सी उसके दिल में उठी। सहसा उसने सिर झटक दिया। भाड़ में जाय मुरादअली और उसका सुअर। उसने मन ही मन कहा। हम तो घर लौट आये हैं।

"बाड़ेवाले मेरे बारे में पूछते थे?"

"हाँ पूछते थे एकाध बार पूछा था।"

"तुमने क्या कहा?"

"मैंने कहा कामपर गये हैं। आते ही होंगे।"

"क्या बार बार पूछते थे?"

"नहीं जी, लोग कामपर जाते नहीं हैं? शाम को साथवाली ने पूछा तो मैंने कहा घोड़े की खाल उतारने गया है?"

एक हल्कीसी मुस्कराहट नत्थू के होंठोंपर दौड़ गयी।

"मगर तुम कहाँ गये थे?"

"फिर बताऊंगा।"

कोई धुमिल अस्पष्ट सी आकुलाहट थी जो नत्थू के दिल को अभी भी मथ रही थी। इस धुकधुकी के कारण वहा सड़कोंपर चक्कर लगाता रहा था, इसी कारण उसने शराब पी थी।"[52]

ऐसे संवादों में मन का, अवस्था का, अन्तर्मन का परिचय मिलता है। नत्थू ऐसा पात्र है जो सारे उपन्यास में द्विधा, चिंता, भय से पीड़ित है। उसके अन्जाने में उसके हाथों जो सुअर की हत्या करवाई गयी, वही इस विनाशलीला का कारण बनी। उसका अपराध बोध उपन्यास में बहुत ही प्रभावी बन गया है।

वास्तविक रूप में "तमस" उपन्यास में भीष्म साहनी ने अंग्रेज नीति, सांप्रदायिकता, घृणा, धर्माडम्बर, झूठा अभिमान आदिपर व्यंग्य किया है। उन्होंने स्पष्ट रूपसे कहा है, सांप्रदायिक आग भड़कानेवाले अंग्रेज ही थे। जिन्हें मुरादअली जैसे देशद्रोही शामिल थे।

मुसलमान आदमी बोल रहा था "काँग्रेस हिन्दुओं की जमात है इसके साथ मुसलमानों का कोई वास्ता नहीं है।

इसका जबाब बड़ी उम्र के आदमी ने दिया "काँग्रेस सब की जमात है हिन्दुओं की, सिक्खों की, मुसलमानों की।"

"यह सब हिन्दुओं की चालाकी है, बख्शीजी, हम सब जानते हैं। आप चाहें जो कहें, काँग्रेस हिन्दुओं की जमात है। और मुस्लिम लीग मुसलमानों की। काँग्रेस मुसलमानों की रहनुमाई नहीं कर सकती।"[53]

इन संवादों से यह पता चलता है कि हमारी यही विडम्बना है कि हम में एकता की कमी है।

लीजा और रिचर्ड की बातचित से यह पता चलता है कि अंग्रेज अफसर और उनकी नीति किस प्रकार थी।

"धर्म के नामपर आपस में लड़ते हैं, देश के नामपर हमारे साथ लडते हैं।" "बहुत चालाक नहीं बनो, रिचर्ड। मैं सब जानती हूँ। देश के नामपर ये लोग तुम्हारे साथ लड़ते हैं और धर्म के नामपर तुम इन्हें आपस में लड़ाते हो।"

"डार्लिंग, हुकूमत करनेवाले यह नहीं देखते कि प्रजा में कौन-सी समानता पायी जाती है। उनकी दिलचस्पी तो यह देखने में होती है कि वे किन किन बातों में एक दूसरे से अलग है।"[54]

बख्शीजी की प्रतिक्रिया भी बहुत ही मार्मिक है -

"फिसाद करनेवाला भी अंग्रेज, फिसाद रोकने वाला भी अंग्रेज, भुखों मारनेवाला भी अंग्रेज, रोटी देनेवाला भी अंग्रेज, घर से बेघर करनेवाला भी अंग्रेज, घरों में बसानेवाला भी अंग्रेज....। अंग्रेज फिर बाजी ले गया।"[55]

निष्कर्ष :-

"तमस" घटना प्रधान उपन्यास होने के साथ उसमें पात्रों की भरमार हैं। सामाजिक यथार्थ का स्पष्टीकरण करने के लिए लेखक ने पात्रों की बातचित भी वास्तविक रूपमें स्पष्ट की है। जो विचारों की सजीवता का परिचय देने में सक्षम सिध्द हुआ है। जिसमें भावाभिव्यक्ति की सरलता, सामाजिक संकीर्णता, युगबोध की यथार्थता है। भीष्मजी ने उसे उपदेश तथा राजनीतिज्ञ के रूप में अभिव्यक्त नहीं किया है। समाज की विडम्बना एवं कमियों को दूर करने का प्रयास किया है।

भीष्मजी का अनुभव, ज्ञान और संस्कार इन वार्तालापों में परिलक्षित होते हैं। उनके विचारों का गांभीर्य स्पष्ट होता है। लेखक ने प्रत्येक बड़ी या छोटी घटना का संकेतात्मक और विस्तारपूर्ण विवरण दिया है। जो संवादों के कारण ही प्रभावी बना है। और स्वाभाविक तथा यथार्थ बन गया है।

"तमस" के संवाद वर्णित घटनाओं और दृष्यों का सजीव चित्रण करने के लिए प्रभावी बने हैं। कथानक का विस्तृत और सजीव चित्रण कथोपकथन से हुआ है। जिससे कथानक में विविधता, स्वाभाविकता और रोचकता उत्पन्न होकर कथा का पर्याप्त विकास हुआ है। "तमस" उपन्यास के संवाद पात्रों का चरित्र स्पष्ट करने के लिए भी सफल हुए हैं। पात्रों का रहन-सहन, विचार, अन्तर्द्वंद्व, क्रिया-प्रतिक्रिया, भाव आदि का व्याख्यात्मक प्रयास "तमस" के संवाद करते हैं। व्यावहारिक संघर्ष का कुशलता के साथ मनोवैज्ञानिक चित्रण इन संवादों की खास विशेषता है। जिनके माध्यम से लेखक ने अपने मंतव्य का प्रकटीकरण किया है। सांप्रदायिकता की संकीर्ण भावना, राजनीति की कुटिलता, पार्टी के लोगों की स्वार्थान्धता स्पष्ट कर सर्व धर्म समभाव का मानवता के धरातल पर स्पष्टीकरण भीष्मजी ने किया है। जो समाज के लिए उपयुक्त बन गया है।

"तमस" के संवाद अनेक गुणों से युक्त है। उपयुक्त, मार्मिक, रोचक, स्वाभाविक, सुबोध, सार्थक, मौलिक, भावुक, सुसम्बध्द, संप्रेषणिय, गतिशील और संक्षिप्त संवादों की योजना भीष्मजी की प्रतिभा स्पष्ट कर समाज के लिए उपयुक्त बने हैं। जिनमें गंभीर व्यंग्यात्मकता भी है। विसंग, विधर्मी द्वंद्व का प्रभावी चित्रण है।जिससे सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, पारिवारिक समस्याओं का वातावरण स्पष्ट किया है। संवादों की दृष्टि से "तमस" उपन्यास उचित एवं उपयुक्त बन गया है, जिन का सफलता से स्पष्टीकरण भीष्मजी ने किया हैं।

2.4 देश - काल वातावरण की समीक्षा :-

"देश काल के अन्तर्गत सामान्यरूप से किसी भी देश अथवा समाज की सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियाँ, आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज तथा समाज की कुरीतियाँ या विशेषताएँ स्पष्ट की जाती है।

1) सामाजिक वातावरण :- सामाजिक जीवन से संबंध रखनेवाले सभी वर्णन वेषभुषा, भाषा, रीति-रिवाज, सामाजिक वर्ग, शिक्षा, संस्कृति, सामाजिक व्यापार का चित्रण होता है।

2) ऐतिहासिक :- ऐतिहासिक वातावरण में किसी सीमा तक काल-स्थान की प्रामाणिकता होनी आवश्यक है।

3) राजनीतिक :- राजनीतिक घटनाओं और राजनीतिक चरित्रों का उद्घाटन किया जाता है।

4) भौगोलिक :- किसी प्रदेश का जलवायु, भौगोलिक सीमा, खेती, पैदावार, वहाँ के रहनेवाले, नदियाँ, पहाड, नाले आदि से संबंधित विवरण उचित प्रसंग के अनुसार समाविष्ट किया जाता है।

5) प्राकृतिक :- प्रकृति के सौंदर्य में जहाँ हरियाली, मंद हवा, पुष्पों की शोभा, झाड़, आंधी, तुफान, धूल, सुखी नदी, नाले, वीरान जंगल, खण्डहर का चित्रण होता है।

उपन्यास में देश-काल-वातावरण का चित्रण कथा के अनुसार किया जाता है। इनके कुछ सांकेतिक आधार और गुण भी हैं।

1) वर्णनात्मक सुक्ष्मता -

2) विश्वसनीय कल्पनात्मकता -

3) उपकरणात्मक संतुलन[56]

लेखक अपने उपन्यास में विशिष्ठ युगबोध का परिचय देता है। जिससे देश तथा समाज की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक परिस्थितियों के साथ रहन-सहन, आचार-विचार, रीति-रिवाजों का यथार्थ परिचय देता है। प्राकृतिक चित्रण एंव पात्रों की मानसिक स्थितियों की सृष्टि प्रभावपूर्ण ढंग से की जाती है। साहित्यकार के पास इतनी तीव्र शक्ति होती है कि वह अपनी कल्पनाओं की सहायता से अमूर्त को भी मूर्त बना देता है। ऐसा करते समय उसे इस बातपर भी ध्यान देना पड़ता है कि उसमें कृत्रिमता न हो। कथानक के स्पष्टीकरण में देशकाल वातावरण साध्य न बन जाय केवल साधन ही बने। इन साधनों से वह सजीवता निर्माण कर सकें इस दृष्टिसे सतर्क रहना पडता है। भीष्म साहनी ने "तमस" उपन्यास में अपनी सशक्तता का परिचय दिया है। वातावरण का प्रभावपूर्ण चित्रण किया है।

उपन्यास में मानव जीवन का विस्तृत चित्रण किया जाता है। मानव जीवन भौगोलिक परिवेश में पनपता है। जिसे लेखक स्थानीय रंग से सजा देता है। हमारे देश में शहरी तथा ग्रामीण वातावरण अलग अलग होते हुए भी उनमें भिन्नता नहीं है क्योंकि शहरकी प्रतिक्रिया गावों में अवश्य प्रतिबिम्बित होती है। जाति, धर्म, संप्रदायों को शहर तथा ग्रामों में समान दृष्टि से देखा जाता है। "तमस" उपन्यास में धार्मिक वातावरण को प्रमुखता मिली है। जिससे मिथ्या धर्माडम्बर पर लेखक ने तिखा व्यंग्य किया है।

वातावरण की निर्मिती करने के लिए लेखक के पास सूक्ष्मता, संवेदनशीलता, गहन गंभीरता, मार्मिकता की आवश्यकता होती है। वह वातावरण के सूक्ष्म अवलोकन से तथा परीक्षण से कथा, पात्र तथा उद्देश्य को उचित दृष्टिकोण से चित्रित करता है। जिससे लेखक की व्यापक दृष्टि का परिचय मिलता है। "तमस" में इन्हीं गुणों से युक्त वातावरण चित्रण किया गया है। जो धार्मिक आतंक को प्रभावपूर्ण रूप में स्पष्टकर पाठक के हृदय को भी भावविभोर कर देता है। धार्मिकता की दर्दनाक, भयावह स्थिति को स्पष्ट कर देता है।

"तमस" उपन्यास में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक वातावरण का प्रभावपूर्ण चित्रण हुआ है।

देश काल और वातावरण चित्रण की दृष्टि से "तमस" में देश के आज़ाद होने से पूर्व के पांच दिनों की कहानी का वर्णन है। जो राजनीतिक इतिहास के परिणामों को चित्रित करती है। अंग्रेज नीति अपने स्वार्थ के लिए हिन्दु-मुसलमानों में सांप्रदायिक दंगे करवा देती है। उनकी "फूट डालो और राज करो" नीति सफल बनी हुओ दिखाई देती है। इतिहास इसका गवाह है कि अंग्रेजों ने ही मुसलमानों को उकसा दिया था। उनकी रक्षा के लिए उन्हें सचेत किया था। जिसके परिणाम स्वरूप "मुस्लिम लीग" की स्थापना हुयी थी। तसम में भी तत्कालीन परिस्थितियों का ऐतिहासिक चित्रण हुआ है।

ऐतिहासिक वातावरण :-

15 अगस्त 1947 को भारत आज़ाद हुआ लेकिन देश को दो भागों में विभाजित कर। यह देश विभाजन भारतीय इतिहास का करूण अध्याय है। जिसके कारण लाखों बेघर हो गये। लाखों अपनी पुरखों की धरती छोडनेपर मजबूर हुए। हजारों की मृत्यू हुयी। लेखक ने यह भारत विभाजन अपनी आँखों से देखा है। जिसका यथार्थ चित्रण "तमस" में किया है। जो भारतीय इतिहास की हकीकत है।

"तमस" ऐसे लोगों की कहानी है, जो एक ही नस्ल के लोग हैं। लेकिन अपने इतिहास को जानते नहीं केवल उसे जीते भर है। ये लोग है कौन? हिन्दू। मुसलमान। सिख। इतिहास प्रेमी रिचर्ड ने उनके इतिहास का परिचय देते हुए कहा है, "ये लोग मध्य एशिया से सबसे पहले यहाँ आये। नस्ल सब की एक थी। वे आर्य कहलाते थे। सभी एक ही मूल जाति के लोग थे। जो अपने इतिहास को जानते नहीं है।" 57

भारतीय इतिहास का तथा उन लोगों की प्रवृत्तियों का वास्तविक घटनाओं का "तमस" में सच्चा चित्रण हुआ है। काँग्रेस तथा मुस्लिम लीग के नेतृत्व में विभाजन की जो भावना पनपी इसका संवेदनशील चित्रण इसमें मिलता है। जो बीते इतिहास की घटना है।

राजनीतिक वातावरण :-

राजनीतिक उथल पुथल तथा अराजकता के कारण भारत का जो विभाजन हुआ उसके पीछे अनेक राजनीतिक पार्टियाँ जिम्मेदार हैं। यह राजनीतिक पार्टियाँ धार्मिक तथा सांप्रदायिक तत्वोंपर ही बनी हुयी हैं।

राष्ट्रीय काँग्रेस :- "तमस" उपन्यास में काँग्रेस की पार्टी है जिनके बख्शी, जनरैल, शंकर, कश्मीरीलाल, रामदास, मेहताजी आदि व्यक्ति इनमें शामिल है। लेकिन केवल जरनैल ही इसमें सक्रिय कार्यकर्ता है। उनके पार्टी का कार्यारंभ प्रभात फेरी से होता है। इसमें भी स्वार्थी लोगों का समावेश है। लेकिन वे राष्ट्रीय चेतना को जागृत करते रहते हैं -

"कौमी नारा।"

"वन्दे मातरम्।"

"बोलो, भारत माता की जय।"

"महात्मा गांधी की जय।"[58]

इस प्रकार कॉंग्रेस पार्टी राजनीतिक स्थिति का परिचय देती है जो वास्तव में जन जागरण का कार्य कर स्वातंत्र्य की मांग करती थी।

मुस्लिम लीग :- "तमस" उपन्यास में तुर्क एवं मुसलमान लोग मुस्लिम लीगी पार्टी के हैं। जिन्होंने स्वतंत्र पाकिस्तान की मांग की। उनकी प्रतिक्रिया थी कि -

"कॉंग्रेस हिन्दुओं की जमात है और मुस्लिम लीग मुसलमानों की। "हिन्दुओं की आज़ादी हिन्दुओं के लिए होगी आज़ाद पाकिस्तान में ही मुसलमान आज़ाद होंगे।"[59] उनके नारे थे -

"पाकिस्तान जिन्दाबाद।"

"कायदे आजम जिन्दाबाद।"[60]

इन्हीं राजनीतिक पार्टियों के कारण ही अखण्ड हिन्दुस्तान का विभाजन हुआ। उनमें फुट डालने का काम अंग्रेज नीति ने किया।

शासक अंग्रेज :- "फूट डालो और राज्य करो" की कूटनीति अंग्रेजों की थी। भीषण नरसंहार, सांप्रदायिक दंगों की आग चारों तरफ फैल गयी। मुरादअलीने अंग्रेज अफसर के कहने से सुअर मार मस्जिद के सामने फिकवा दिया, परिणाम स्वरूप मुसलमानों द्वारा गाय की हत्या हुयी। और भीषण दंगों का प्रारंभ हुआ।

अंग्रेज नीति का परिचय लीजा और रिचर्ड के संवादों द्वारा मिलता है।

"डार्लिंग, हुकूमत करनेवाले यह नहीं देखते कि प्रजा में कौन सी समानता पायी जाती है। उनकी दिलचस्पी तो यह देखने में होती है कि वे किन किन बातों में एक दूसरे से अलग है।"[61]

"सरकार तो बदनाम है। मैं अंग्रेज अफसर हूँ। ब्रिटिश सरकार पर तो आप को विश्वास नहीं है। उसकी बात को तो आप कहाँ सुनेंगे।" रिचर्ड ने व्यंग्य से कहा। रिचर्ड जानकर भी अन्जान बनना चाहता है। यह लोग ऐसे ही आपस में लड़ते रहें, यही उसकी इच्छा है। उसके हाथ में सत्ता है वह इन दंगों को चाहे तो रोक सकता था लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।

इस तरह लेखक ने राजनीतिक वातावरण की वास्तविक झाँकी प्रस्तुत की है। जो सांप्रदायिकता की जड़े है। मनोहरलाल ने अन्त में कहा है - "यहाँ सभी टोडी एकट्ठे हुए हैं। सरकार की चालपूसी करनेवाले। हम किसी से डरते नहीं है, साफ बात मुँहपर करते हैं। इन फिसादों के लिए जिम्मेदार कौन

है? सरकार उस वक्त कहाँ थी जब शहर में तनाव बढ़ रहा था, अब कफर्यू लगाया गया है, उस वक्त क्यों नहीं लगाया गया? उस वक्त साहब बहादुर कहाँ थे? हम किसी से डरते नहीं है, साफ बात मुँह पर कहते है....।"[62]

सरकार की नीति तथा अंग्रेज राज का परिचय मिलता है।

सामाजिक वातावरण :-

भीष्मजी ने समाज का चित्रण करते हुए जात-पात, छुआ-छुत, धर्म, रहन-सहन तथा संस्कृति का भी सुन्दर चित्रण है। समाज में व्याप्त हिन्दु, मुसलमान, सिख जातीयों का परिचय दिया हैं।

सामान्य ढंग से दिन का व्यापार, इकतारा बजाता हुआ फकीर, सुबह सुबह मंदिर या गुरूद्वारे में जानेवाली औरते मंदिर की घण्टियाँ, नमाज पढ़ने की आवाज इन दृश्यों से समाज का सुबह का चित्र अंकित हुआ है। लेकिन राजनीतिक उथल पुथल से दिनक्रम बिघड जाता है। वातावरण आतंकभरा बन जाता है। भयावह बनता है। सामाजिक स्थिति बिकट बनती है। जातिभेद विकृत रूप धारण करता है।

"दिन के उजाले में भी शहर अधमरा सा पड़ा था। मानो उसे सांप सूँघ गया हो। मण्डी अभी भी जल रही थी। म्युनिसिपैलीटी के फायर बिग्रेड ने उसके साथ जूझना छोड दिया था। [63]

"मुहल्ले के बीच लीकें खिंच गयी थी। हिन्दुओं के मुहल्ले में मुसलमान को जाने की हिम्मत नहीं थी, और मुसलमानों के मुहल्ले में हिन्दू-सिख अब नहीं आ जा सकते थे। आँखों में संशय और भय उतर आये थे।"

"घरों के दरवाजे बन्द थे, शहर का कारोबार, स्कूल, कालिज, दफतर सभी ठप्प हो गये थे। खाते - पिते घरों के लोग अपने अपने बचाव में उलझ गये थे। सार्वजनिक काम ठप्प हो गये थे।"

"नया मुहल्ला के चौक में घोड़ा मरा हुआ था। शहर के बाहर गांव को जानेवाली सड़कपर एक अधेड़ उम्र के आदमी की लाश मिली थी। कालिज रोड पर जूतों की एक दूकान और साथ में बैठनेवाले दर्जी की दूकान लुट ली गयी थी। एक और लाश शहर के सिरे पर एक कब्रिस्तान में मिली थी। लाश किसी अधेड़ उम्र के हिन्दू की थी और उसके जेब में से कुछ रेजगारी और दहेज के कपडों की एक फेहरिस्त मिली थी।"[64]

इस प्रकार के अनेक उदाहरण ऐसे है जो सामाजिक चित्र को भयावह रूप में प्रकट करते हैं।

सांस्कृतिक वातावरण :- (धार्मिक)

भीष्मजी ने सांस्कृतिक वातावरण का भी प्रभावपूर्ण चित्रण किया है। हिन्दु संस्कृति की महान कामना का परिचय दिया है।

साप्ताहिक सतसंगत, वानप्रस्थीजी की प्रार्थना, उपनिषद के श्लोक, मुसलमानों के द्वारा कलमा

पढ़ना, नमाज पढ़ना, सिखोंद्वारा गुरूद्वारे जाकर गुरू ग्रंथ-साहब की बेदी के सामाने माथा नवाना आदि क्रियाएँ संस्कृति का परिचय देती है।

"गिने चुने इन विशिष्ट मन्त्रों तथा श्लोकों में भारतीय संस्कृति का सार पाया जाता था।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः

सर्वे भद्राणि पश्चतु सा कश्चित् दुःख भाग भवेत।"

शांतिपाठ का मंत्र -

"ॐ द्यौ शान्ति पृथ्वी, शान्तिरापः

शान्तिरौषधयः शान्ति वनस्पतिः।"

समस्त चर-अचर जगत के सुख की कामना -

"सबपर दया करो भगवान

सबपर कृपा करो भगवान"[65]

मुस्लिम संस्कृति का भी चित्रण है -

तसहबीह हाथ में लिए मुल्ला ने इकबालसिंह से कलमा पढ़वाया -

"ला इलाह इल्लिल्ला,

मुहम्मद रसूल अल्ला।"[66]

पुरूषों की सुन्ता करना, मुस्लिम रीतिरिवाजों का परिचय भी दिया है।

सिखों की संस्कृति का भी चित्रण है। गुरूवाणी तथा गुरूद्वारे का वातावरण चित्रित किया है।

"जो बोले सो निहाल,

सत सिरी अकाल।"[67]

"जिस के सिर उपरि तूँ सुआमी

सो दुःख कैसा पावे"[68]

इस प्रकारकी पंक्तियों से भीष्मजी ने धार्मिक एवं सांस्कृतिक वातावरण को चित्रित किया है।

मैदान में होनेवाले उत्सवों का भी परिचय निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य है।

"इस मैदान में हर आये दिन कुछ न कुछ होता रहता था। जाड़ो में हर इतवार को यहाँ कुत्तों की लड़ाई हुआ करती थी, लोग शर्ते बाँधते थे। यहीं पर इसी मैदान में नारेबाजी हुआ करती थी। हजारों का जमाव होता था। यहीं पर बाहर से आनेवाले सरकस लगा करते थे, ताराबाई का सरकस और परशुराम का सरकस। यहीं पर बैसाखी का ढ़ोल बजा करता था। यहीं पर अब सियासी जलसे होने लगे थे। मुस्लिमलीग के जलसे होते थे। और बेलचा पार्टी के भी।"[69]

प्राकृतिक वातावरण :-

उपन्यास में प्रकृति का चित्रण किया जाता है लेकिन "तमस" में भीषण प्रकृति का वर्णन है। जो भयावह है। भीष्मजी ने लीजा और रिचर्ड के संवादों से भारतीय प्रकृति का वर्णन किया है जो बहुत ही सुंदर है।

ऐतिहासिक घाटी का परिचय दे रहा है जहाँ से हिन्दुस्तान में आनेवाले अन्य आक्रमण इसी रास्ते से आये थे। बायीं ओर नीचे छोटे छोटे पेड़ों का घना जंगल था। जहाँ लाल रंग की मिट्टी थी। "उस पहाड़ की तलहटी पर पानी के झरने हैं और घने पेड़ों के झुरमुट है। जल के सोते नीचे तक पहुँचकर पहाड़ में से फूटे हैं, बहुत सुन्दर जगह है। एक एक झरने को अलग अलग नाम दिये है : राम और सीता अपनी मायथोलॉजी के अन्य नामों पर।"[70] सैय्यदपूर गांव का प्रकृति सौंदर्य इसमें है। "यह गांव बड़ा सुंदर था, अमन चैन के दिन यहाँ कोई आये तो इसकी खूबसूरती पर मुग्ध हुए बिना नही रह सकता था। लगता भगवान ने अपने हाथों से बनाया है। छोटी सी नदी के ऊपर एक छोटी-सी पहाड़ी पर घोडे के नाल की शक्ल में यह गांव खड़ा था। नदी के नील जल प्रवाह के पार लुकाटों के घने बाग थे जहाँ अनेक झरने बहते थे। ज़मीन की मिट्टी लाली मायल थी। हर घड़ी पहाड़ी का रंग बदलता रहता था। कभी वह झीनी-सी नीली चादर ओढ़ लेती, कभी उसका चेहरा तपे ताँबे जैसा दमकने लगता, कभी उसके कन्धों पर सुरमई घटाएँ खेलने लगती, कभी उसपर हरियावल बिछ जाती। इस प्रकृति-स्थल की गोद में इस गाँव के सभी लोग पीढ़ी-दर-पीढ़ी रहते चले आये थे।"[71]

निष्कर्ष :-

देशकाल वातावरण की दृष्टि से इस उपन्यास में देश के आजाद होने से पूर्व का राजनीतिक इतिहास प्रस्तुत किया है। अंग्रेजोंने भारत को छोडते हुए सांप्रदायिक दंगों का जहर दे गए। अंग्रेजों की प्रेरणा से ही मुसलमानों की अपनी सुरक्षितता का एहसास हुआ। परिणाम स्वरूप मुस्लिम लीग की स्थापना हुयी। सांप्रदायिकता का विषैला वातावरण बना। भीषण रक्तपात हुआ। बजार और मकान भस्म हुए। शहर वीरान बना। यह दंगें गांवों और कस्बे में भी फैल गये। लाखों मारे गये। स्त्रियोंने अपने बच्चों सहित कुए में आत्मबलिदान किया।

भीष्मजी ने अपने उपन्यास में सजीवता तथा वास्तविक वातावरण की निर्मिती की है। जो लेखक की सूक्ष्म निरिक्षण दृष्टि का परिचय देती है। लेखकने वर्णनात्मक शैली में सूक्ष्म, मार्मिक, गहन, गंभीर, विशाल वातावरण को चित्रित किया है। जो उपन्यास, कथा, पात्र तथा संवादों के लिए सहायक बन गया है। पात्रों के आचार विचार एवं रहन सहन का चित्र सा प्रकट करता है।

वर्णन में स्थानिक रंग एवं आंचलिकता के रंग भी सुंदर ढंग से चित्रित हुए है। जो कथानक

को वास्तविक बना देती है। क्षेत्रिय विशेषता और परिस्थितियों का गंभीर वातावरण भीष्मजी की खास विशेषता बन गयी है। सामाजिक रीति रिवाज, कुरीतियों का जो रूप भारत के एक प्रदेश में है वही दूसरे प्रदेशों में भी है। सांप्रदायिक समस्या देश व्यापी समस्या है। शहर, गांव, कस्बों में वह व्याप्त है। शहरों का सांस्कृतिक, भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक, धार्मिक वातावरण का संबंध ग्रामीण जीवन से भी जुड़ा हुआ है। इस कारण भीष्मजी ने "तमस" उपन्यास में लोक तत्वों का आधार लेकर प्रभावी वातावरण की सृष्टि कर युगबोध का सफल चित्रण किया है।

- - -

2.5 "तमस" उपन्यास की भाषा शैली का समीक्षात्मक अध्ययन :-

प्रताप नारायण टंडन ने कहा है "औपन्यासिक प्रगति का एक आधार भाषा की समृध्दि है। भाषा मूलतः मानव समाज की एक रचना है। भाषा के रूप में मनुष्य के मुख से जो ध्वनी निकलती है और जिसके द्वारा वह अपनी मनोभावनाओं को व्यक्त करता है उसके दो आधार है।

1) मानसिक आधार - मनुष्य के मस्तिष्क में उठनेवाले विचारों की अर्थपूर्णता

2) भौतिक आधार - वाणी के रूप में उच्चारन

भाषा के अनेक रूप है -

1) सैध्दान्तिक व्याकरणिक पक्ष -

2) क्षेत्रिय भाषा का पक्ष -

3) समन्वित भाष्य का पक्ष -

4) ग्राम्य भाषा का पक्ष -

5) उर्दू प्रधान भाषा का पक्ष -

6) अंग्रेजी प्रधान भाषा का पक्ष -

7) मिश्रित भाषा का पक्ष -

8) लोक भाषा"[72] पात्रानुकूल, स्वाभाविक, सुबोध आदि भाषा के गुण है।

शैली :- "प्रत्येक भिन्न साहित्यिक विधा अपने मूल रूप में वाड.मय की एक विशिष्ट शैली होती है। उपन्यास में वर्णन तत्व के जितने रूप होते है उतनी शैलियाँ भी हो सकती है। जैसे -

1) वर्णनात्मक शैली -

2) विश्लेषणात्मक शैली -

3) आत्मकथातमक शैली -

4) डायरी शैली -

5) पत्रात्मक शैली -

6) पूर्वदिप्ति शैली (फलैशबैक शैली) -

7) संवाद शैली -

8) नाटकीय शैली -

9) काव्यात्मक या भावात्मक शैली -

10) लोककथात्मक शैली -

11) आंचलिक शैली -

12) मनोविश्लेषणात्मक शैली"[73]

उपर्युक्त विवेचन के आधार से "तमस" के भाषा शैली की समीक्षा ऐसी है -

उपन्यास की भाषा सरल, सुबोध, प्रभावपूर्ण, कोमल, भावूक, सरस तथा व्यंजक होती है। इसी के अनुरूप "तमस" उपन्यास की भाषा भी है। जिसमें लेखक ने पात्र तथा प्रसंगानुकूल गंभीर भाषा में उपन्यास लिखा है। उर्दू, अंग्रेजी, पंजाबी, संस्कृत भाषा के शब्द एवं वाक्यांश की भी बहुलता है। भाषा का साहित्यिक रूप क्लिष्ट नहीं है। भाषा का प्रभावपूर्ण तथा गतिशील रूप पाठक तथा श्रोता के मनोमस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ने में सक्षम है। भाषा का रूप घटनाओं को सजीव बना देता है। पात्रों का व्यक्तित्व एवं वातावरण की गंभीरता स्पष्ट करनेवाली भाषा अनेक गुणों से युक्त है। जिससे उपन्यास में स्वाभाविकता आयी है। जीवन के सत्यों को उद्घाटित करने के लिए भाषा की गहनता प्रभावी बनी है। जो गागर में सागर भरने का काम करती है। "तमस" उपन्यास की भाषा में निम्न लिखित विशेषताएँ दिखाई देती है।

1) पात्रानुकूलता :-

"तमस" उपन्यास भारत विभाजन के कथ्यपर आधारित है। विभाजन के समय देश को किन हालातों से गुजरना पड़ा इसका प्रभावी चित्रण है। सांप्रदायिक भेद-भावों का, संघर्षों का चित्रण इसमें है। इस कारण समाज के सभी स्तर के पात्र इसमें हैं। हिन्दु, मुसलमान, सिख, ईसाई, गरीब, अमीर सभी है। परिणामतः भाषा का भी प्रयोग पात्रानुकूल हुआ है। लीजा और रिचर्ड अंग्रेजी भाषा में बोलते हैं। हिन्दु बाबू अंग्रेजी जानता है यह देख लीजा भी उसके साथ अंग्रेजी में बातें करती है -

"यू हिण्डू, बाबू?

"यस, मैडम, "बाबूने तनिक झेंपकर कहा।

"आई गेस्ड राइट।"[74]

"यस मैडम।"

सिख पात्र बंतो - हरनामसिंह, राजो, जरनैल पंजाबी भाषा में बातें करते हैं।

जरनैल - "जरा वी लगन आज़ादी दी

लग गयी जिन्हाँ दे मन दे विच।"[75]

राजो - "मैं के जाणा भैण अपणा-अपणा नसीबा। जहवाँ पासे आग लगी है" (मैं क्या जानू बहन? तुम्हारी जान बचा रही हूँ या तुम्हें मौत के मुँह में झोंक रही हूँ। चारों तरफ आग लगी है।"[76]

मुसलमानी पात्र उर्दू भाषा का प्रयोग करते हैं। जैसे फकीर इकबाल सिंह से नमाज पढ़वा लेते है - "ला इलाह इल्लिल्ला

मुहम्मद रसूल अल्ला"

इस प्रकार तमस उपन्यास में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग लेखक ने किया है - वह कथानक की वास्तविकता स्पष्ट कर देता है। प्रसंगानुकूल भाषा का भी सुंदर प्रयोग लेखक ने किया है। खास कर करूण प्रसंग स्पष्ट करने के लिए भावुक एवं कोमल भाषा का प्रयोग लेखक ने किया है।

2) **स्वाभाविकता :-**

पात्रों की मानसिक स्थिति तथा वातावरण की अनकुलता के अनुसार स्वाभाविक भाषा का प्रयोग "तमस" में हुआ है।

लेखक ने नगर तथा ग्राम के वातावरण का चित्रण सुंदर ढंग से किया है। जिसे पढ़ते समय हमारे सामने शहर, कस्बा, इलाका का चित्र सा खड़ा होता है। और उपन्यास में सजीवता आ जाती है। वास्तविकता का आभास रहता है। वैसे देखा जाय तो उपन्यास स्वानुभवोंपर ही आधारित है। इस कारण प्रत्येक प्रसंग, घटना, पात्र, वातावरण का स्वाभाविक रूप हमारे सामने उपस्थित हो जाता है। भाषा का कौशल्य देख लेखक की सूक्ष्म निरिक्षण की दृष्टि से हम परिचित हो जाते है।

सुबोधता :- उचित भावों को लेकर "तमस" उपन्यास लिखा है जिसमें हर भाषा का विशुध्द प्रयोग भी किया है। सत्संगत में वानप्रस्थीजी गा रहे थे -

"सबपर दया करो भगवान
बसपर कृपा करो भगवान्"
"फैलाये घोर पाप यहाँ मुसलमान ने
नेअमत फलक ने छीन ली दौलत जमीन ने।"77

शैली :-

"तमस" उपन्यास में अनेक शैली का प्रयोग किया है।

1) वर्णनात्मक शैली।:
2) विवेचनात्मक/विवरणात्मक शैली।:
3) विश्लेषणात्मक शैली।
4) भावात्मक शैली;
5) व्यंग्यात्मक शैली;
6) चलचित्रात्मक शैली।

1) **वर्णनात्मक शैली :-** "तमस" में सांप्रदायिक दंगों का वर्णनात्मक एवं विस्तृत चित्रण करने में भीष्मजी सफल हुए है। वर्णनात्मक शैली में लेखक परिस्थिति, वस्तु, घटना, पात्र आदि का उद्घाटन करता हैं। जिससे वर्णन सजीव और चित्रात्मक **बन गया** है। भीष्मजी ने वर्णनात्मक शैली में ब्यौरा दिया

है। प्रत्यक्ष शैली में तथा विश्लेषणात्मक- शैली में लेखक ने जो भी वर्णन किया है वह सजीव, स्वाभाविक एवं सुन्दर तथा करूण बन पड़ा है।

"हवा में छोड़ा हुआ अग्नीबाण आगे बढ़ता है, उसकी नोक घर्षण के कारण चमकती है, उसमें से अंगार फूटते है। महाभारत के युध्द में ऐसा ही अग्नी बाण छोड़ा गया था। हवा को काटता चला जा रहा था। फिर वह कौरवों के एक योध्दा की ढ़ाल से जा लगा, ढाल में से अंगारे फूटने लगे। पर तीर फिर भी आगे बढ़ता गया। अग्नीबाण की यही विशेषता है, वह गिरता नहीं। वह बाण घूमता है, समस्त रणभूमि में घूमता है, घूमता है और चारों ओर से आग की लपटें उठने लगती है। कही किसी योध्दा के मुकूट को छू लिया, वहाँ आग की लपट निकलने लगी किसी रथ के छत्र से जा लगा, छत्र जलने लगा। चारों ओर घूमता हुआ बाण उस समय तक घूमता रहता है जब तक धू धू करके चारों ओर आग नहीं जलने लगती है। फिर बाण लौट आता है, शत्रू की छावनी को जलाकर विजयी सैनिक की भांति उसमें से प्रकाश फूट रहा होता है, देखते ही आँखे चुँधिया जाती हैं, हवा को चीरता हुआ आता है, लगता है हवा को आग लगाता जा रहा है।"[78]

इस वर्णन द्वारा भीष्मजी ने प्रतिकात्मक शैली का भी उपयोग किया है। हमारे पौराणिक संदर्भों के माध्यम से अंग्रेज नीति की आधुनिकता का बोध कराया है। अग्नीबाण की तरह अंग्रेजों ने भी हमें पराजित किया है। उनकी ही नीति सफल बन जाती है और समझौता उन्हीं के द्वारा ही किया गया है। जो प्रतीक को उद्घाटित करनेवाला है।

2) **विश्लेषणात्मक शैली :-**

पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण करने में भीष्मजी अपनी कुशलता का परिचय देते हैं। पात्रों का अन्तर्द्वंद्व, संघर्ष, मानसिक तनाव की स्थिति, भयावस्था, राग, द्वेष, घृणा, प्रेम, मानवता का सर्वांगिण विश्लेषण उन्होंने किया है। नत्थू का अपराध बोध एवं द्वंद्व इस उपन्यास में प्रभावपूर्ण ढंगमें विश्लेषित किया है। रणवीर का भी चित्रण प्रभावपूर्ण बना है -

"रणवीर कद का छोटा था इसलिए वह मन-ही-मन शिवाजी की भूमिका में अपने को देखा करता था। छातीपर दोनों बाहें बांधे, तिरछी आँखों से वह सड़क और सड़क के आस-पास के इलाके का जायजा लिया करता था। किसी किसी वक्त उसके मन में ललक उठती थी कि कमर में तलवार लटकती हो, चौड़ा कमरबन्द हो, अँगरखा हो, और सिर पर पीले रंग की पगड़ी हो, और उसपर शिरस्त्राण हो। ढ़ीला सा पाजामा पहनकर इनके बड़े संग्राम में भाग लेना बड़ा अटपटा लगता था। पाजामा और सीधी सादी कमीज और नीचे फटी हुई चप्पल वीर सैनिक का बाना नहीं था। पर जो अधिकार-भाव उसकी वेषभुषा में नहीं था, उसे रणवीर ने कड़ककर हुक्म देनेवाली अपनी आवाज से पूरा कर लिया था। फौज

के कमाण्डरों की तरह हुक्म देता था और दल के सभी सदस्यों को कड़े अनुशासन में रखता था। पीछे-पीछे हाथ बांधे, तनिक झुंककर गहरी चिंता में खोया हुआ वह "शस्त्रागार" में ऊपर-नीचे टहलता वैसे ही जैसे औरंगजेब के साथ लोहा होने से पूर्व शिवाजी टहलते रहे होंगे।"[79]

इससे छोटा सा रणवीर स्वयं को शिवाजी समझ बैठा इसका सुंदर वर्णन विश्लेषणात्मक शैली में किया है। उसी प्रकार मेहताजी का स्वयं को जवाहर नेहरू जैसा समझना, जरनैल का बलिदान, रिचर्ड की नीति, बख्शीजी की विवशता, राजो की मानवीयता, मुसलमानोंद्वारा इकबालसिंह की अमानवीयता का विश्लेषण कलात्मकता के साथ किया है।

3) **विवरणात्मक शैली :-**

"तमस" में भीष्मजी ने विवरणात्मक शैली का भी समावेश किया है। जो सांप्रदायिक दंगों के पश्चात अंग्रेज अफसरद्वारा रिलिफ कमेटी खोली जाती है -

"हमें आँकडे चाहिए, केवल आँकडे। आप समझते क्यों नहीं? आप लम्बी हाँकने लगते है, सारी रामकहानी सुनाने लगते है, मुझे राम कहानी नहीं चाहिए, मुझे केवल आँकडे चाहिए। कितने मरे, कितने घायल हुए, कितना माली नुकसान हुआ...."

बाबू परेशान हो उठता। वह आँकडे माँगता था, लोग उसे अपने जख्म दिखा रहे थे।

"गेंडासा सीधा मेरे माथे पर लगा। क्यों बाबूजी, मेरी आँख बच जाएगी?"[80]

4) **भावात्मक शैली :-**

"तमस" उपन्यास की भाषा भावुक है। जिसका प्रवाह लेखक की आत्मा से निकलकर आत्मा तक जा पहुंचता है। सारा कथानक शोकान्त से भरा हुआ है। सांप्रदायिकता का विनाश, क्रंदन, रूदन बड़ी करूणता के साथ चित्रित किया है।

इत्रफरोश की मृत्यू का वर्णन कारूण्यपूर्ण शैली में किया है - "ओ लोको, मार डाला। मुझे मार डाला। ओ लोको।" इत्रफरोश इतना घबरा गया था कि उसके मुँह से बोल नहीं फूट रहा था। वह कमर में लगे जख्म से इतना नहीं मर रहा था जितना त्रास और भय से और भोले बालक द्वारा किए गए हमले से। उसके लिए अपने थैलों का बोझ उठा पाना असंभव हो रहा था। और उनके बोझ के नीचे ही वह मुँह के बल धडाम से गिरा।"

इंद्र के भागते पाँव उसे दो क्षण पहले साफ नजर आ रहे थे पर अब गली में उस लड़के का नाम निशान नहीं था।

"एक शिथिल सी चीख उसके होठों से निकली और उसकी आँखे गली के ऊपर फैले गहरे नीले आसमान के छोटे से टुकड़े पर लग गयी। वहाँ दो-तीन चीलें उड़ रही थी। चीले अब दो की जगह

चार हो गयी थी और आकाश की नीलिमा धीरे धीरे हिलने और धूमिल पड़ने लगी थी।"[81]

इस प्रकार उपन्यास की सभी घटनाएँ भावात्मक शैली में वर्णित है। स्त्रियों का झुण्ड कुए में कुद आत्मबलिदान करता है यह प्रसंग भी करूणता से ओतप्रोत है।

5) **व्यंग्यात्मक शैली :-**

"तमस" उपन्यास का मूल उद्देश्य ही व्यंग्यात्मक है। लेखक ने सांप्रदायिकता, धर्मान्धता, स्वार्थान्धता पर व्यंग्य किया है। ऐसे फिसादों में हमेशा गरीब जनता की हालत बड़ी विचित्र होती है। गरीब ही ज्यादा मारे जाते हैं। एक सुअर की मृत्यु से न जाने कितने लाख लोग मारें गये। मानवी मूल्य इसमें कुछ नही है। सिर्फ राजनीतिक एवं धार्मिक मूल्यों को ही महत्व दिया जाता है।

कश्मीरीलाल बोले जा रहा था, "किसके साथ मुकाबला करूँ? चरखे के साथ?"

"चरखें के साथ क्यों? तलवार के साथ।" नजीतसिंह बोला।

"तलवार रखने की इजाजत है न मुझे? क्यों बख्शीजी? बख्शीजी चूप।

"और पिस्तौल रखने की भी?"

"पिस्तौल में हिंसा बहुत है।" शंकर ने जोड़ा।

"तलवार में कम है?"

"हाँ, तलवार में तो अपनी ताकत लगती है ना। पिस्तौल में तो बस घोड़ा दबाते जाओ। और मारते जाओ।"[82]

इसमें गांधीजी के अहिंसा पर लोगों ने व्यंग्य किया है।

निष्कर्ष :-

"तमस" उपन्यास में भाषा का विशुध्द रूप पाया जाता है। लेखक ने प्रसंगानुरूप भावात्मक, चिंतनात्मक, गंभीर भाषा का प्रयोग किया है। सरल, सरस, सुबोध, प्रवाही, मार्मिक भाषा पाठक का मन आकर्षित कर लेती है। वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक शैली में पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। स्वानुभूतिपरक एवं भावुक भाषाशिल्प से उपन्यास का सुसंगठन मौलिक बन गया है। तत्कालीन परिस्थिति एवं वातावरण हू-ब-हू रूपमें उद्घाटित किया है। पात्रों की अवस्था, स्थिति का सूक्ष्मातिसूक्ष्म चित्रण है। जिसमें यथार्थता के साथ कल्पनाओं का भी पूट है। जो मानव स्वभाव का पूर्ण ज्ञान देने में सक्षम है। बोल-चाल की सहज शैली भाषा में पायी जाती है। अंग्रेजी एवं संस्कृत तथा सिख लोगों की जो भाषा एवं वाक्यांश है उसमें किसी भी प्रकार की जटिलता नहीं है। वह बोधगम्य बन गयी है।

भाषा में रोचकता लाने के लिए या उपन्यास का सौंदर्य बढ़ा देने के लिए संस्कृत, अरबी, फारशी, उर्दू, पंजाबी, अंग्रेजी शब्द भण्डार भी नाटयात्मक रूपसे अवतरित हुआ है। जिससे शुध्द

वातावरण की निर्मिती होती है। लोकोक्ति, मुहावरें, कहावतें, अलंकार एवं रसानुकूल भाषा का प्रयोग भी सुंदर ढंग से कर देने में भीष्मजी कुशल हैं। पात्रों का संघर्ष, वातावरण की सजीवता, सांप्रदायिकता की भीषणता प्रभावी रूप में भाषा के माध्यम से अर्थपूर्ण दृष्टिकोण से चित्रित हुयी है। इसमें लेखक के संस्कार, समाज की स्थिति, राजनैतिक बातों की रहस्यात्मकता, स्वार्थान्धता, गंभीरता, धर्माडम्बर की अर्थहीनता प्रकट होती है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि भाषाशिल्प की दृष्टि से यह उपन्यास अर्थपूर्ण है। जिसमें बौध्दिक, चिंतनशील, गंभीर, व्यंजक बातों को तथा उनकी समस्याओं को लेखक ने उद्घटित किया है। भाषा सौंदर्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण उपन्यास बन गया है। जो लेखक की वास्तववादी दृष्टि स्पष्ट करता है।

हर वर्ग के चरित्र की अभिव्यक्ति स्वाभाविक संस्कार से युक्त भाषासे की है। जो दर्शकों पर अमिट छाप छोड़ देती है।

2.6 "तमस" के उद्देश्य का समीक्षात्मक अध्ययन :-

"उद्देश्य की दृष्टि से उपन्यास में मुख्यतः ऐसी रचना है, जिनका उद्देश्य मानव प्रकृति का स्वार्थपरता, क्रूरता, भिन्न भिन्न सामाजिक समस्याएँ, सुधारात्मक आन्दोलनों, दहेज, अनमेल विवाह, संकुचित जाति भावना, धार्मिक पाखण्ड, धर्म के नामपर होनेवाले अत्याचार, सामाजिक नैतिकता के खोखलेपन, समाज में निम्न वर्ग के कृषक, श्रमिक के शोषण, नारी की असहायावस्था, आध्यात्मिक पथावलम्बन के माध्यम से आत्मिक उत्कर्ष और साधना, राजनीतिक स्वतंत्रता का महत्व, भिन्न भिन्न पारिवारिक समस्याएँ, हिंसा और अहिंसा की समस्या, ग्राम्य जीवन के पुनः प्रतिष्ठापन की समस्या, क्रान्तिकारिता की समस्या, वैज्ञानिक प्रगति और सामाजिक संतुलन के जीवन की समस्या तथा जीवन के व्यावहारिक स्वरूप में सत्य, शिव और सुन्दर की सिध्दि की समस्याएँ आदि हैं। उद्देश्य की विभिन्न धारणाएँ भी है -

1) नीति शिक्षा -
2) मनोरंजन -
3) कौतुहल सृष्टि -
4) सुधार भावना–
5) हास्य सृष्टि –
6) सामाजिक समस्याएँ -
7) राजनीतिक उद्देश्य -

8) मार्क्सवादी उद्देश्य -

9) जीवन दर्शन का प्रकटीकरण।[83]

"तमस" उपन्यास भी सोद्देश्यपूर्ण है। क्योंकि - उपन्यास किसी न किसी उद्देश्य को लेकर लिखा जाता है। इसमें लेखक की लोककल्याण कारी भावना, आदर्श सीख रहती है। लेखक जीवन के सर्वोत्तम स्वरूप की तलाश करता रहता है, जिसमें मानवता हो। उसका साहित्य 'बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय' बनें। लेखक अपने जीवन के कच्चे अनुभवों को नया रूप देने की कोशिश करता है। जिसमें उपन्यासकार का विकासमान दृष्टिकोण रहता है। वह समाज सापेक्ष पात्रोंका निर्माण करता है। समाज निरपेक्ष व्यक्ति की कल्पना कभी भी नहीं करता। व्यक्तिमन की गहराई पैठ वह व्यक्ति सत्यों द्वारा उद्घाटित करता है। मुखौटे के पीछे छिपी नैतिकता की भी तलाश करता है। साहित्यकार समाजद्वारा ही रचा जाता है और साहित्य समाज की रचना भी करता है। दोनों का परस्पर संबंध होता है।

भीष्मजी ने इसी मानवतावादी दृष्टिकोण से "तमस" लिखा है जिसमें लोगों एवं समाज की कमियों का उद्घाटन किया है। समाज तथा व्यक्ति में एकता की बड़ी कमी है। हम सभी संगठित बन एक दृढ़ शक्ति को प्राप्त करते हैं तो हमें कोई भी अलग नहीं करा सकता। एकता संगठन की दृष्टि से भीष्मजी ने "तमस" लिखा है।

लम्बी दासता के उपरान्त 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। अंग्रेजों की कुटनीति ने हिन्दू-मुसलमानों में सांप्रदायिकता की आग लगा दी। परिणाम स्वरूप भारत-पाक विभाजन हुआ। मजहबी घृणा ने भीषण रूप लिया। अत्याचार, लूट-मार, कत्ल जैसी घटनाएँ घटी और जीवन के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। इन सभी घटनाओं को भीष्मजी ने अपनी आँखों से देखा है। उनका मूल उद्देश्य यही है कि ऐसी भीषणता से समाज क्षत-विक्षत बनता है समाज की कितनी हानी होती है उससे समाज को परिचित कराना।

फसाद की भीषण विनाश लीला का दृश्य कथानक का मूल केंद्र बिंदू है। जिसके इर्द-गीर्द घटनाओं का गठन किया है। एक छोटीसी घटना समाज का -हास करनेपर भी तुली रहती है। ऐसी घटनाओं को त्याग देना, आपस के भेद-भाव मिटाना, मानवता की दृष्टि से मानव को देखना आज की माँग है। धर्म निरपेक्ष और मानव सापेक्ष की भावना की आज जरूरत है। धर्म की संकीर्ण प्रवृत्ति हटाकर उसमें उदार, उन्नत तथा विशाल भावनाओं की जरूरत है। तभी मानव धर्म विश्व मैत्री का पथ बनता है। यही मानवधर्म की उद्देश्यपूर्ति के लिए "तमस" का निर्माण किया गया है।

उपन्यास केवल मनोरंजन तथा उपदेश के लिए नहीं लिखा जाता। मानवीय समस्याओंका चित्रण

कर लेखक उसमें चिंतन की गहराई एवं उदात्तता की खोज करता है। भीष्मजी ने स्वयं कहा है - "लेखक की दृष्टि विसंगतियों को देखती है, विडम्बनाओं को, अंतर्विरोधों को, और जीवन की परिवर्तनशीलता उसे सब से अधिक विडम्बनाए और विसंगतियाँ जुटाती है। हरा-भरा घर कैसे सुनसान हो गया, जिन महलों के सामने हाथी झूलते थे, वहाँ खण्डहरों में अब साँप लोटते हैं।"[84] इन परिवर्तनों को देख साहित्यकार आकुल हो उठता है। और अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति देता है।

"मनुष्य को व्यापक, सामाजिक परिप्रेक्ष्य में देखते हुए वह मनुष्य के निजी रिश्तों के दायरे पर ही बस नहीं कर देता, वह मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन को समाज के विशाल जीवन का अंग मानकर देखता है। इसलिए समाज में पायी जानेवाली समस्याएँ उसकी रचनाओं के विषय बनती है। इसी कारण वह नस्लवाद, सांप्रदायिकता, जातिवाद, धर्मान्धता आदि का विरोध करता है। इसी दृष्टि के अनुसार वह उन सभी कुचेष्टाओं का विरोध करता है और उन्हें निरावृत्त करता है जो पाठक अथवा नागरिक की नजर से मूल विसंगति और अन्याय से दूर हटाकर उसे छदम् आध्यात्मिकता, व्यक्तिवाद आदि के खटाटोप की ओर ले जाता है। और जीवन के निकट ले आता है, उसे यथार्थ का बोध कराता है और उसे अपनी सामाजिक भूमिका निभाने की प्रेरणा देता है।"[85]

कितने उद्‌बोधक है भीष्मजी के विचार। इन्हीं विचारों की यथार्थता "तमस" में मिलती है। इसी मूल उद्‌देश्य से "तमस" का निर्माण हुआ है। लेखकने निम्न उद्‌देश्यों को लेकर "तमस" का निर्माण किया है -

1) अंग्रेज कूटनीति एवं तटस्थता की वृत्ति को दिखाना।
2) धर्म के प्रति प्रगतिशील दृष्टिकोण:
3) राष्ट्रीय पार्टियों की स्वार्थी वृत्ति:
4) गरीबों का दमन:
5) अमानवीयता:
6) नारी रूप:
7) ऐतिहासिक संदर्भ :
8) धर्माडम्बर की परिणति :

आदि का यथार्थ चित्रण करना लेखक का उद्‌देश्य रहा है।

1) अंग्रेज नीति :-

भारत विभाजन की पृष्ठभूमिपर लिखा गया "तमस" देश की तत्कालीन परिस्थिति को सोद्‌देश्यपूर्ण रूप में चित्रित करता है। पाकिस्तान की मांग अंग्रेजों की शह थी। अंग्रेजोंने ही मुसलमानों को भड़का दिया था। मुरादअली के माध्यम से अंग्रेज अफसर रिचर्ड नत्थू को सुअर मारकर देने को कहता है। वही सुअर मस्जिद की सीढ़ियोंपर फेंक दिया जाता है। मुसलमानों द्वारा फिर गौ हत्या की जाती है परिणामतः सारा शहर तनावग्रस्त बनता है। मारकाट, आगजनी भयंकर रूप धारण करती है, उसमें लाखों की संपत्ति नष्ट हो जाती है।

रिचर्ड और लीजा के संवाद इस उद्देश्य से महत्वपूर्ण बने हैं।

"बहुत चालाक नही बनो, रिचर्ड मैं सब जानती हूँ। देश के नामपर वे लोग तुम्हारे साथ लड़ते हैं और धर्म के नामपर तुम इन्हें आपस में लड़ाते हो। क्यों ठीक है न?"

रिचर्ड - "डार्लिंग, हुकूमत करनेवाले यह नहीं देखते कि प्रजा में कौनसी समानता पायी जाती है, उनकी दिलचस्पी तो यह देखने में होती है कि वे किन किन बातो में एक दूसरे से अलग है।"[86]

रिचर्ड की तटस्थता भी इसका परिचय देती है। रिचर्ड से विनती करने आये लोगों को वह कहता है - "सरकार तो बदनाम है। मैं अंग्रेज अफसर हूँ। ब्रिटिश सरकार पर तो आप को विश्वास नहीं है, उसकी बात को तो आप कहाँ सुनेंगे।"

"आप लोग ब्रिटिश सरकार के खिलाफ, तो भी दोष ब्रिटिश सरकार का और जो आपस में लड़े तो भी दोष ब्रिटिश सरकार का।"[87] इन वक्तव्यों से पता चलता है कि अंग्रेजों की नीति के कारण ही इतने भयावह दंगे हुए फिर भी उन्होंने जातीय मामलोंको बताकर तटस्थता की भूमिका ली।

उसके बाद लेखक ने सांप्रदायिक दंगों का उससे बनी विनाशलीला का विस्तृत वर्णन किया है। शहर के सांप्रदायिक दंगें गांवों और कस्बों में फैल जाते हैं। भयंकर विनाश के पश्चात अंग्रेजों की ओर से कोशिश होती है। कफर्यू लगवाया जाता है, रिलिफ कमेटी नियुक्त की जाती है। शान्ति स्थापित हो जाती है।

अन्त में बख्शीजी कहते हैं "फिसाद करनेवाला अंग्रेज, फिसाद रोकनेवाला अंग्रेज, भूखों मारनेवाला अंग्रेज, रोटी देनेवाला अंग्रेज, घरसे बेघर करनेवाला अंग्रेज, घर में बसानेवाला भी अंग्रेज।"[88] अंग्रेजोंकी कूटील नीतिका परिचय "तमस" के माध्यमसे लेखक ने दिया है।

2) धर्म के प्रतिदृष्टिकोण :-

भारत विविध धर्मोंका देश है। समाज में धर्म की भावना ओत-प्रोत है। यहाँ प्राचीनकाल से अनेक धर्मों तथा धार्मिक संप्रदायों का प्रचार-प्रसार हुआ है। लेकिन यह धार्मिक भावना अब तक संकीर्ण प्रवृत्तियों के लोगोंतक सीमित थी। इसी संकीर्णता को भीष्मजी ने प्रभावपूर्ण ढंगसे चित्रित किया है। धर्म व्यवस्था समाज को संकुचितकर उसका विभाजन कर देती है। भीष्मजी ने इन संकीर्ण भावना का चित्रण किया है साथ ही साथ अपने मंतव्य को भी स्पष्ट किया है। इसमें प्रगतिशिल दृष्टिकोण एवं धर्म के उदात्त तत्वों का संकेत कर धर्म की मूल प्रवृत्ति और समाजद्वारा विकृत बनायी गयी प्रवृत्ति चित्रित करना लेखक का महान उद्देश्य है।

सिख, हिन्दू, मुसलमान, इसाई, धर्मोंके तत्वों में महान संदेश है। धर्म का आचरण सदाचार के लिए होता है। धर्म मानव समाज के जीवनस्तर को उदात्त बना देता है। धर्म मांगल्य का रक्षण करता है।

लेकिन आज समाज में धर्म भावना कितनी विकृत बनी है। सभी एक ही जाति के लोग होते हुए भी विभिन्न संप्रदायों के कारण एक दूसरे की मारकाट करते हैं। यह सांप्रदायिक तनातनी का तमस सघन होता जा रहा है। विनाश का घोर तमस छाया रहता है। न जाने इसमें कितने लाखों लोग मारे गये न जाने कितनी संपत्ती जलकर नष्ट हो गयी? इसी उद्देश्य से लेखक ने 'तसम' लिखा।

3) **राष्ट्रीय पार्टियाँ/स्वार्थान्धता :-**

लेखक ने राष्ट्रीय पार्टियोंका चित्रण कर उनकी विसंगतियों को चित्रित किया है। काँग्रेसने आन्दोलनसे देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराया। काँग्रेस में समझदार मुसलमानों का एक वर्ग भी सम्मिलित था। परंतु स्वार्थी एवं धर्मान्ध मुसलमान उन्हें हिन्दुओं का पालतू कुत्ता समझते थे। परिणामतः मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। अंग्रेजों की "फूट डालो और राज करो" नीति थी। जिससे देश का वातावरण गरम हो उठा और विभाजन हुआ। इसमें लाखों मारे गये, लाखों बेघर हुए, लाखों की संपत्ती नष्ट हुयी।

इन राष्ट्रीय पार्टियों में स्वार्थी लोगोंकी कमी नहीं थी। उनका भी पर्दाफाश लेखक ने किया है। मेहताजी की "बीमा एजन्सी, शंकर-मेहता का आपसी बैर, कोहली साहिब का रेशमी नाड़ा और उसपर चली बहस, जरनैल द्वारा कश्मीरीलाल, शंकरलाल, जीतसिंह जैसों की गद्दारी का उल्लेख, नालियाँ साफ करने का नाटक सभी स्वार्थी लोगों का चित्रण इसमें है।

मुसलमानोंद्वारा गरीब हिन्दू जनतापर किए जानेवाले अत्याचारों का भी चित्रण इसमें है। हरनाम का अपने घर से बेघर हो जाना, उसके बेटे को जबरदस्ती मुसलमान बनवा देना, हिन्दु लडकीपर मुसलमानोंद्वारा उसकी मृत्यूतक बलात्कार करने की घटनाएँ बहुत ही दर्दभरी है।

इसाई धर्म तो दया तथा शांति का महान संदेश देनेवाला है। लेकिन उन्होंने भी इस देश में जो शरारत की वह विडम्बनापूर्ण है। रिचर्ड कहता है कि सिव्हील सर्विस ही ऐसी है जो उन्हें तटस्थ बना देती है।

इस प्रकार अंग्रेज लोगोंने भी स्वार्थभावनासे ही राज किया।

बेगुनाहों की शोकान्तिका :-

भीष्मजी ने स्पष्ट किया है कि ऐसे दंगों में गरीब ही छल लिए जाते है। घृणित स्वार्थोंसे युक्त यह सांप्रदायिकता खोखली है। यह परस्पर विरोधी घृणा गरीब-अमीरों में भेद करती है। इस में जिनकी हत्या हुयी वे दुर्बल ही थे। इत्रफरोश की हत्या तो विश्वास की हत्या है। शाहनवाज द्वारा मिलखी के पीठ में लात जमाना इस बात का ही द्योतक है। दंगों के बाद तफसील का काम जारी था तभी देवदत्त बोला -

"पन्नोंपर एक खाना और जोड़ दो। गरीब कितने मरे और खाते पिते लोग कितने मरे।"

"इसमें क्या तुक है? तुम हर बात में अमीर-गरीब को घसीट लातें""यह भी एक पहलू है आँकडे इकट्ठे करने का। दोनों ओर के गरीब कितने मरे, अमीर कितने मरे। इससे भी तुम्हें कई बातों का पता चलेगा।"[89]

निष्पाप लोगों को जो भुगतना पड़ा उसका सजीव चित्रण भी है। "रिलिफ ऑफिस के आँगन में घुमता प्रत्येक व्यक्ति अपना विशिष्ट अनुभव लेकर आया था। लेकिन उस अनुभव को जाँचने, परखने, उस में से निष्कर्ष निकालने की क्षमता किसी में नहीं थी। शून्य में ताकने, सिर हिला हिलाकर हर किसी की बात सुनते रहने के अलावा किसी को कुछ सूझ नहीं रहा था। कोई नहीं जानता था कि उसे क्या करना है, किधर जाना है। आगे क्या होगा उसकी धुँधली-सी रूपरेखा भी किसी की आँखों के सामने नहीं थी। लगता जैसे कोई अनिवार्य घटना चक्र चल रहा है, जिस पर किसी का कोई बस नहीं है, न किसी के हाथ में निर्णय है, न संचलन, न संचलन की क्षमता। कठपुतलियों की तरह सभी घूम रहे थे, भूख लगती तो उठकर इधर-उधर से कुछ खा लेते, याद आती तो रो देते, और कान लगाये सुबह से शाम तक लोगोंकी बातें सुनते रहते।"[90] इसमें लेखकने निष्पाप लोगोंकी दयनीय स्थिति को उद्घाटित कर दिया है। असहाय, बेसहारा लोगों को इस भीषण ताण्डव नृत्य ने कुचल दिया या ना मुरदा ना जिंदा ऐसी उनकी स्थिति बनवाई गयी थी।

सन्देह, अविश्वास, असुरक्षा के भाव प्रत्येक के मनमें थे। बीभत्स दंगों का रूप अमानवीय जनसंहार में बदल गया था। जिससे भयानक रक्तपात हुआ था। लोग अपने घरों, परिवारों एवं संबधियों से बिछुड गये। ऐसे दंगे करवाये जाते हैं उसमें बेगुनाह ही मारे जाते हैं। खाँते-पिते बच निकलते है।

नारी रूप :-

लेखक ने प्रमुख समस्या के साथ कुछ नारी चरित्रों का अंकन किया है, जो बहुत ही सोद्देश्यपूर्ण है। परेशान नत्थू को समझानेवाली उसकी पत्नी, रिचर्ड की पत्नी लीजा, मानवीयता का परिचय देनेवाली राजो, बलिदान तथा आत्मसमर्पण करनेवाली जसबीर कौर तथा अन्य नारी रूपों का भी चित्रण है।

पुरूष की बैचेनी को राहत देनेवाली स्त्री के रूप में नत्थू की पत्नी है। उसके शरीर में अथवा उसके व्यक्तित्व में ऐसा कुछ था कि नत्थू उसे अपने समीप पाकर अधिक सुरक्षित महसूस करता था। वह घर में बनी रहती तो लगता घर में स्थिरता है, वह आँखों से ओझल हो जाती तो नत्थू को लगता जैसे सारी सृष्टि डोलने लगी है। वह कभी परेशान और उत्तेजित नहीं होती थी, घबराती नहीं थी, उसका दिल कभी धक-धक नहीं करता था, कोई बात उसके कलेजे को चाटती नहीं थी। उसके अलसाये शरीर में नत्थू को स्निग्धता का भास मिलता था, उसकी चाल ढाल में, प्रत्येक गति में स्थिरता

थी, संतुलन था।[91] इस प्रकार इस उपन्यास में पत्नी और उसकी कर्तव्यपरायणता तथा दृढ़ नारी के रूपमें चित्रित किया है।

रिचर्ड की पत्नी लीजा का मन भी मानवीय, सहृदय नारी के रूपमें अवतारित होता है। वह परदेशी नारी होते हुए भी भारतीय लोगों के प्रति उसके मन में दया और सहानुभूति है। वह भारतीय संस्कृति, इतिहास तथा सौंदर्य से परिचित होना चाहती है। उसे रिचर्ड की कुटील नीति पसंद नहीं है। इसीके परिणाम स्वरूप वह नशे में धुत रहती है।

राजो एक ऐसी नारी है जिसमें भारतीय नारी की ममता, प्रेम, सहृदयता दिखाई देती है। इन फसादों में वह दो हिन्दूओंको पनाह देती है। उनकी जान बचाती है। इससे स्पष्ट होता है कि मानवता पूर्ण रूपसे मरी नहीं है। तो उसके बिल्कुल विपरित स्वभाववाली उसकी बहु है।

हरनामसिंह की पत्नी बन्तो सुझ-बुझ वाली नारी है। उसकी बेटी जसबीर कौर आत्म रक्षा के लिए अन्य स्त्रियों के साथ कुएँ में कुदकर बलिदान करती है। मुसलमान अल्लाहरक्खा से अपने को सुरक्षित देख हिन्दू प्रकाशो उसके साथ निकाह करती है।

आदि अनेक नारी रूपों का उद्‌घाटन इसमें किया है।

ऐतिहासिक संदर्भ :-

भीष्मजी हिन्दुस्तान के इतिहास से पूर्ण रूपसे परिचित है। उन्होंने अपने ऐतिहासिक घाटी का परिचय दिया है। मध्य ऐशियासे आनेवाले मंगोलिया से आनेवाले, अलेक्साण्डर आये तथा बौध्द धर्मप्रचारक यहाँ से दूर दूर तक गये। यहाँ रहनेवालों की नस्ल एक ही थी।

यहाँ के पुराने किले, मंदिर, पीर की कब्र, गुरूद्वारे का भी परिचय दिया है। सत्‌संगत, भजन, किर्तन, धार्मिक ग्रंथों का भी परिचय दिया है। असलें के बारेमें भी कहा है कि मुसलमानोंने मस्जिदमें, सिखोंने गुष्द्वारे में, हिन्दु लडकोंने शस्त्रागार में जिसको इकट्‌ठा किया था। चाकू, छूरा, किरणान विशिष्ठ प्रकार की लाठियाँ, तीर कमान, बंदूके, भालें, बर्छे, तलवारें आदि।

तीरकमान के बारे में बताया है - "इसकी नोंकपर संखिया रगड़ दे तो यह विषबाण बन जायेगा, इसके आगे मुश्क काफूर लगा दें तो अग्नीबाण बन जायेगा, जहाँ चोट करेगा वही आग निकलने लगेगी, नीला थोथा लगा दे तो बाण जहाँ लगेगा इसमें से जहरीली गैस निकलेगी।"[92] यह तीरकमान हमारे पौराणिक गाथाओं की ही देन है।

राणा प्रताप की घटना, शिवाजी महाराज, योगी महाराज की योगशक्ति का परिचय दिया है।

धर्माडम्बर की परिणति :-

सुअर मारने की एक क्षुद्र घटना के परिणाम कितना भीषणलीला में होता है इससे लेखक हमें

परिचित कराना चाहते है। उपभोक्ताओं की नीति, जनवादी संस्कृति का संघर्ष वर्णवाद, जातिय एवं सांप्रदायिक दृष्टि, धर्म के नामपर सामुहिक हत्याकाण्ड का परिणाम अराजकता में होता है। प्राचीन काल से भारतीय समाज इससे ग्रस्त है। वर्ग बनते हैं - बिगडते हैं। उनमें अलगाव या बिखराव की स्थिति हैं। जिससे मानवीय जीवनावस्था विकृत होती है। इन विकृतियोंसे ग्रस्त मनुष्य सामर्थ्य हीन बनता है। उसकी अवस्था दयनीय होती है। सांप्रदायिकता के "तमस" को नष्ट करना हमारा प्रथम कर्तव्य है जिसके कारण मनुष्य-मनुष्य बन जायेगा। जिसका मानवतासे नाता होगा केवल मानवता ही उसका धर्म होगा।

केवल पांच दिनोंका धार्मिक बवण्डर बहुत कुछ कहता है। इसमें जाति-प्रेम, धर्म, संस्कृति, परम्परा, इतिहास, राजनीति की संकल्पना और उसकी विकृति का परिचय दिया है। इस भयानक षड़यंत्र में आम जनता पीसी जाती है। यह सांप्रदायिकता से बनी शोकान्तिका है। जिसमें घात-प्रतिघात, हिंसा-प्रतिहिंसा, क्रिया-प्रतिक्रिया के द्वारा अमानवीय जनसंहार होता है घृणीत स्वार्थोंसे युक्त यह सांप्रदायिकता, धर्माडम्बरता खोखली है। जिसमें मानवी मूल्य कुछ भी नहीं है।

पार्टी के कार्यकर्ता स्वार्थी है। उनमें कोई आपसी मेल जोल नहीं है। एक दल "भारत माता की जय" बोलता है, तो दूसरा "पाकिस्तान जिंदाबाद।" इनमें तनाव तथा संघर्ष है। सौजन्य के पीछे भी राक्षसीवृत्ती है।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि भीष्मजी मानववादी साहित्यकार है। उनमें प्रगतिशील विचारधाराओंका प्रवाह है जो "एकता" की मांग करता है। मानवता उनकी प्रमुख ध्वनी है। उनका संघर्ष हमारी मान्यताओं, मूल्यों की ओर संकेत करता है। उपर से सीधी-सादी लगनेवाली घटना अन्तर्मन में कितनी पैठ गयी है कितना भयंकर रूप लेती है। इसका स्पष्टीकरण सम-सामयिक घटनाओं द्वारा सोददेश्यपूर्ण दृष्टिसे स्पष्ट किया है। इन घटनाओं के पीछे तो श्रध्दाभाव है, सद्भावना है एवं अंदर से उमड़नेवाली आत्मियता है।

सामाजिक व्यवस्था की विसंगतियों - अंतर्विरोधी दृष्टि का स्पष्टीकरण कर लेखक और पाठक से नाजूक रिश्ता जोड़ने में सफल हुए हैं। अपनी सहानुभूति और सद्भावना पाठक के दिल में उतर उसके दिल की गहराई तक पहूंचा दी है। इसमें यथार्थ के साथ आदर्श है। मानव प्रेम की कमियोंका उद्घाटन "तमस" में सफलता के साथ हुआ है। दिल खोलकर एवं भरे दिल से लिखा है। इसमें भीष्मजी के हृदयकी उदारता, दृष्टि की विशालता, दुखी दलित लोगों के प्रति आस्था प्रकट हुई है।

भीष्मजीने देश की मूक मानवता को चेतना दे कर उत्तेजित किया है। देशव्यापी भावना का

आग्रह किया है। अमानुष पात्रों को लेकर गहरी मानवीयता भरी व्यथा कथा लिखी है। राष्ट्र की इच्छा आकांक्षा और सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतिकात्मकता स्पष्ट की है। अपनी ध्येयनिष्ठा के लिए सहायक होनेवाले विचारों, सिध्दान्तों तथा कार्यक्रमों के प्रति सजगता प्रकट की है। लेकिन भीष्मजी भावना के स्तरपर अपने ध्येय की सिर्फ पूर्ति नहीं चाहते तो अपनी चिंतनशीलता का परिचय भी देते है। राष्ट्रीय चेतना, जनजागरण का संदेसा भी देते हैं, जो प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की श्रेष्ठता है।

इन्सान और इन्सानी रिश्तों को लेकर "तमस" का निर्माण हुआ है जो अन्याय, हिंसा और स्वार्थान्धता के प्रति विद्रोह करता है। गरीब इन्सान के हमदर्द को मानवीय दृष्टि से देखा हैं। उनके उज्वल भविष्य एवं उनके सुख की कामना करते है। इसमें प्रामाणिकता है, किसी भी प्रकार का आरोप नहीं है। लेखक का मूल उद्देश्य जीवन से जुड़ा रहता है। उसे ही वह चित्रित करता है। उसके सत्यों को ढूँढता है। और जीवन मूल्यों को खोजता है। किसी सत्ता, पार्टी एवं सिध्दान्त का समर्थन एवं विरोध वह करता है। प्रकृति, परिवेश, सामाजिक संदर्भों एवं स्थितियों को देखता है। और उन्हें मानवीय संदर्भोंसे जुड़ा देता है। जीवन की विषमताओं का सामना करने की शक्ति देता है। भीष्मजीने इसी उद्देश्य पूर्ति के लिए "तमस" का निर्माण किया है।

- - -

2.7 संदर्भ सूची :

1. डॉ. प्रताप नारायण टंडन - 'हिन्दी उपन्यास कला' पृ. 2
2. श्री नवलजी - नालन्दा 'विशाल शब्द सागर' पृ. 499
3. भीष्म साहनी 'तमस' पृ. 65
4. वही पृ. 65
5. वही पृ. 40
6. प्रताप नारायण टंडन - 'हिन्दी उपन्यास कला' पृ. 163
7. वही पृ. 2 - 9
8. भीष्म साहनी 'तमस' पृ. 86
9. वही पृ. 40
10. वही पृ. 107
11. वही पृ. 255
12. वही पृ. 250
13. वही पृ. 255
14. वही पृ. 253
15. वही पृ. 251
16. वही पृ. 10
17. वही पृ. 168
18. वही पृ. 26
19. वही पृ. 62
20. वही पृ. 36
21. वही पृ. 109
22. वही पृ. 36
23. वही पृ. 158
24. वही पृ. 65
25. वही पृ. 35
26. वही पृ. 250
27. वही पृ. 152

28. भीष्म साहनी 'तमस' पृ. 153
29. वही पृ. 157
30. वही पृ. 159
31. वही पृ. 162
32. वही पृ. 75
33. वही पृ. 149
34. वही पृ. 180
35. वही पृ. 189
36. वही पृ. 189
37. वही पृ. 211
38. वही पृ. 212
39. वही पृ. 212
40. वही पृ. 220
41. वही पृ. 223
42. वही पृ. 10
43. वही पृ. 283
44. वही पृ. 199
45. वही पृ. 231
46. वही पृ. 65
47. वही पृ. 68
48. डॉ. प्रताप नारायण अंडन - 'हिन्दी उपन्यास कला' पृ. 219-224
49. भीष्म साहनी - 'तमस' पृ. 41 - 42
50. वही पृ. 211
51. वही पृ. 153
52. वही पृ. 118 - 119
53. वही पृ. 35
54. वही पृ. 49
55. वही पृ. 250

56. डॉ. प्रताप नारायण टंडन - 'हिन्दी उपन्यास कला' पृ. 300 - 322
57. भीष्म साहनी - 'तमस' पृ. 40
58. वही पृ. 34
59. वही पृ. 35
60. वही पृ. 34
61. वही पृ. 49
62. वही पृ. 248 - 249
63. वही पृ. 136
64. वही पृ. 137
65. वही पृ. 65 - 66
66. वही पृ. 230
67. वही पृ. 194
68. वही पृ. 188
69. वही पृ. 22
70. वही पृ. 41
71. वही पृ. 194
72. डॉ. प्रताप नारायण टंडन - 'हिन्दी उपन्यास कला' पृ. 234 - 241
73. वही पृ. 3 - 4
74. भीष्म साहनी - 'तमस' पृ. 96
75. वही पृ. 29
76. वही पृ. 222
77. वही पृ. 66
78. वही पृ. 73
79. वही पृ. 159
80. वही पृ. 256 - 257
81. वही पृ. 168
82. वही पृ. 265

83. डॉ. प्रताप नारायण टंडन - 'हिन्दी उपन्यास कला' पृ. 341 - 351

84. भीष्म साहनी - 'अपनी बात' पृ. 71

85. वही पृ. 108

86. भीष्म साहनी - 'तमस' पृ. 49

87. वही पृ. 82 - 83

88. वही पृ. 250

89. वही पृ. 263

90. वही पृ. 271

91. वही पृ. 171

92. वही पृ. 77

- - -